Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक- 41

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

20 सिफर 1441 हिज्री कमरी 8 इख़ा 1399 हिजरी शम्सी 8 अक्तूबर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

अख़लाक़ को उचित करें, इन्सानी आदतों को ठीक करें, क्रोध न हो विनय तथा विनम्रता इस के स्थान पर हो।

दुआ से ,तौबा से काम लो और सदक़े देते रहो ताकि अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल और करम के साथ तुमसे मामला करे।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मग़ज़ूब और ज़ाल्लीन की राहों से बचने की हिदायत

और फिर غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ के मुक़ाबला में है। इस का विर्द करने वाला चश्मा مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ से लाभ पाता है जिसका अर्थ और अभिप्राय यह है कि क़यामत के दिन के मालिक हमें इस से बचा कि यहूदियों की तरह जो दुनिया में ताऊन इत्यादि बलाओं का निशाना हुए और उसके प्रकोप से हलाक हो गए या इसाइयों की तरह निजात की राह खो बैठें। इस में यहूद का नाम मग़ज़ूब इस लिए रखा गया है कि उनके कर्मों के बदला से दुनिया में भी उन पर अज़ाब आया क्योंकि उन्होंने ख़ुदा तआला के पवित्र नबियों और सच्चों को झुठलाया की और बहुत से कष्ट पहुंचाएं और यह बात भी याद रखनी चाहिए कि ख़ुदा तआला ने जो यहां सूरह फ़ातिहा में यहूदियों के मार्ग से बचने की हिदायत फ़रमाई और इस सूरह को अज़्ज़ाल्लीन पर ख़त्म किया अर्थात उन की राह से भी बचने की हिदायत फ़रमाई तो इस में क्या भेद था। इस में यही राज़ था कि उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर भी एक किस्म का ज़माना आने वाला है, जब कि यहूद का अनुकरण करने वाले ज़ाहिर परस्ती करेंगे और उपमाओं को हक़ीक़त पर अर्थ करके ख़ुदा के सच्चे की तक़ज़ीब के लिए उठेंगे, जैसा कि यहूद ने मसीह इब्ने मरियम का इन्कार किया था और उन्हें यही मुसीबत पेश आई कि उन्होंने उसके अर्थों पर ठट्ठा किया और कहा कि अगर ख़ुदा का यही अभिप्राय था कि ईलिया का प्रतिरूप आएगा तो क्यों ख़ुदा ने अपनी भविष्यवाणी में इसका स्पष्टीकरण नहीं की। अत: इसी मार्ग और तरीक़ा पर इस समय हमारे विरोधियों ने भी क़दम मारा है और मेरे इन्कार और कष्ट पुहंचाने में उन्होंने कोई उपाय बाक़ी नहीं छोड़ा। यहां तक कि मेरे क़त्ल के फ़तवे दिए और तरह-तरह की चेष्टाओं और तरीकों से मुझे अपमानित करना और समाप्त करना चाहा । अगर ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से गर्वनमेंट बर्तानिया का इस देश में राज न होता तो ये बड़े लम्बे समय से मेरे क़तल से दिल ख़ुश कर लेते, परन्तु ख़ुदा तआला ने उनको उनकी हर अभिप्राय में असफल किया और वह जो इस का वादा था कि وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ वह पूरा हुआ।

अत: इस दुआ में غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ का फ़िर्क़ा मुसलमानों के एक गिरोह की इस हालत का पता देता है जो वह मसीह मौऊद के मुक़ाबला में विरोध धारण करेगा और ऐसा ही अज़्ज़ाल्लीन से मसीह मौऊद के ज़माना का पता लगता है कि इस वक़्त सलीबी फ़ित्ना का ज़ोर अपने चरम बिन्दु पर पहुंच जाएगा। उस वक़्त ख़ुदा तआला की तरफ़ से जो सिल्सिला स्थापित किया जाएगा वह मसीह मौऊद ही

शेष पृष्ठ 12 पर

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

आंहज़रत ज़हर या असर की किरत में से कभी कोई आयत हमें देते थे

हज़रत अबू मुअम्मर रज़ि से रिवायत है कि मैंने हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत रज़ि से पूछा :क्या नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ुहर तथा असर की नमाज़ में क़ुरआन मजीद पढ़ा करते थे? उन्होंने कहा हाँ। मैं ने कहा हुज़ूर के पढ़ने का इल्म आप को कैसे होता? कहा: हज़ूर की मुबारक दाढ़ी के हिलने से।

अबूक़तादा रज़ि से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ुहर और अस्र की दो रकअतों में सूरह फ़ातिहा और कोई सूरत पढ़ा करते थे और कभी हमें भी कोई आयत सुना देते।

हज़रत जाबिर रज़ि बिन समुरा से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत सअद रज़ि (बिन अबी वक़ास) से कहा: लोगों ने तो हर बात में आपकी शिकायत की है यहां तक कि नमाज़ में भी। हज़रत सअद रज़ि ने कहा :मैं तो पहली दो रकअतें लम्बी पढ़ाता हूँ और पिछली दो छोटी और मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नमाज़ की पैरवी करने में सुस्ती नहीं करता। हज़रत उमर रज़ि ने कहा: आप ने सच कहा है। आपके बारे में मेरा यही ख़्याल था या कहा: आप के बारे में मेरी यही धारणा थी।

(सहीह बुख़ारी भाग 2 किताबुल आज़ान प्रकाशन 2006 ई कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

मुसलमान वह है जो ख़ुदा तआला के समस्त नबियों पर ईमान लाए।

मैं मुसलमानों को ध्यान दिलाता हूं कि मसीह मौऊद के दावा को लापरवाही से न देखें इस से इस्लाम जैसी वस्तु हाथ से जाने का भय है।

قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۡ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ

(अलबकर 137) **की तफसीर में हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब खलीफतुल मसीह सानी फरमाते हैं कि**

"इस आयत से स्पष्ट है कि मुस्लिम वह है जो ख़ुदा तआला के समस्त नबियों पर ईमान लाए और नबुव्वत की दृष्टि से उन में कोई अन्तर न करे। जिन अम्बिया का उसे इल्म हो उन की नबुव्वत का नाम लेकर इक़रार करे। और जो मालूम नहीं उन की नबुव्वत पर वैसे ही ईमान लाए । अर्थात यह विश्वास करे कि हर क़ौम में ख़ुदा तआला का कोई न कोई नबी ज़रूर आया है और हम सबको सच्चा स्वीकार करते हैं। और उनकी पेश की गई शिक्षाओं को ख़ुदा तआला की तरफ़ से मानते हैं। अत: जो व्यक्ति अपने ज़माना या इससे पहले ज़माना के सब नबियों की नबुव्वत को स्वीकार करे और किसी नबी का इन्कार न करे वह मुस्लिम है क्योंकि समस्त नबियों की नबुव्वत को स्वीकार कराने के बाद अल्लाह तआला ने यह वाक्य फ़रमाया है कि نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ۔ हम

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-21)

फ़ुलडा में मस्जिद बैयतुल हमीद के उद्घाटन आयोजन में हुज़ूर अनवर का ख़िताब सुनने के बाद मेहमानों के ईमान वर्धक विचार।

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

22 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक मंगलवार शेष.....)

इसके बाद 7 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रिहिल अज़ीज़ इस हाल में तशरीफ़ ले आए जहां आयोजन हो रहा था। हुज़ूर अनवर के आने से पहले मेहमान अपनी अपनी सीटों पर बैठ थे।

आज के इस आयोजन में शामिल होने वाले मेहमानों में 27 मेंबर क़ौमी असेम्बली जर्मनी , जिनमें 14 अपनी पार्टी के प्रतिनिधि हैं,शामिल थे। इसके अतिरिक्त दफ़्तर वज़ारत ख़ारजा के 3 प्रतिनिधि थे। जिनमें "धर्म और सियासत" के डायरेक्टर भी हैं। वज़ारत दाख़िला और डिवलपमैंट मिनिस्ट्री के प्रतिनिधि भी थे। जर्मन आर्मी के 3 डायरेक्टर साहिबान थे। युवाईस ए और फ्रैंच एंबेसी के पोलीटिक्ल ऑफीसरज़ शामिल थे। मेम्बर नैशनल असैंबली ऑफ़िसिज़ के 11 प्रतिनिधि थे। प्रैस ऐंड मीडिया के 6 प्रतिनिधि भी शामिल थे। 5 प्रोफ़ेसर भी शामिल थे जिनमें बर्लिन यूनिवर्सिटी की नायब सदर और जर्मनी में मध्य एशिया पर उस समय सनद माने जाने वाले प्रोफ़ेसर शटाइन बाख़ भी शामिल थे इसके अतिरिक्त कई सियास्तदान, धार्मिक लीडर और वेल्फेयर एसोसिएशन और सिवल सोसाइटी से सम्बन्ध रखने वाले लोग शामिल थे। कुल 82 मेहमान शामिल थे।

स्टेज पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ Mr. Niels Annen मिनिस्टर आफ़ स्टेट ऐंड डिपटी फ़ौरन मिनिस्टर Mr. Frank Heinrich मेम्बर आफ़ पार्लियामेंट स्पूक्स परसन फ़ार राईट्स और Omid Nouripour मेम्बर आफ़ पार्लियामेंट स्पूक्स परसन फ़ार फ़ौरन अफ़सर बैठे थे।

प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय जरी उल्लाह मुबल्लिग़ सिलसिला जर्मनी ने की और इसके बाद उसका जर्मन अनुवाद प्रस्तुत किया। इसके बाद आदरणीय दाऊद अहमद नैशनल सैक्रेटरी उमूर ख़ारिजा जर्मनी ने जमाअत का परिचय करवाया।

इसके बाद आदरणीय अमीर साहिब जर्मनी अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया और मेहमानों को स्वागत कहा। अमीर साहिब ने कहा कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत एक रुहानी जमाअत है जो 200 से अधिक देशों में फैली हुई है और इसके कई मिलियन मेम्बर हैं। जमाअत और इसके मैंबर प्रत्येक समय ख़ुदा तआला की रहमानियत का आइना बनने, समाज में अमन स्थापित करने और मानव जाति के दुख और कष्टों को कम करने में व्यस्त रहते हैं। हमें इस बात का विश्वास है कि धर्म के द्वारा ही इन्सानों में एकता पैदा की जा सकती है क्योंकि एक मुसलमान के लिए यह अनिवार्य है कि वे समस्त अंबिया और पवित्र किताबों पर ईमान लाऐं।

अमीर साहिब ने कहा: तारीख़ी तौर पर अगर देखा जाए तो जमाअत अहमदिया 1923 ई से ही जर्मनी में स्थापित हो गई थी जब बर्लिन में एक मस्जिद की बुनियाद रखी गई थी। लेकिन इसका बनाने का काम inflation और उस समय की आर्थिक अवस्था के कारण से पूर्ण नहीं हो सकी था। पहली मस्जिद इस दृष्टि से फिर 1957 ई में जंग के बाद हिमबर्ग में बनाई गई। ठीक 60 साल पहले अर्थात 1959 ई में फिर फ्रैंकफ़र्ट में भी एक मस्जिद बनाई गई। यह जर्मनी की पहली 2 मस्जिदें थीं जो जंग के बाद बनीं। आज जमाअत अहमदिया की संख्या 50,000 के लगभग है जो 255 जमाअतों में स्थानीय तौर पर बंटी हैं। जमाअत के मेम्बर स्थानीय सतह पर विभिन्न तौर पर सोसाइटी की सेवा कर रहे हैं और interreligious dialogues में हिस्सा लेते हैं। विभिन्न प्रोग्राम आयोजित किए जाते हैं जैसा के नए साल के अवसर पर वकारे अमल, ख़ूनदान देने के मंसूबे, charity walks और tree planting इत्यादि। इसके अतिरिक्त 2008 ई में जामिया अहमदिया जर्मनी की स्थापना हुई जो कि जर्मनी में पहली संस्था थी जो मुबल्लग़ीन तैय्यार करती है। यह 7 वर्ष की पढ़ाई अब तक लगभग 60 नौजवान पूर्ण कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त एक साल पहले एक welfare organization स्थापित की गई जो रिफ्यूजीज़, बे-घर लोगों और किंडरगार्टन की सहायता इत्यादि का काम सरअंजाम दे रही है।

अमीर साहिब ने बताया अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ौम के समस्त कानूनों का अनुकरण करना अनिवार्य समझती है। जमाअत के मेम्बरों के लिए जर्मनी उनका देश बन चुका है क्योंकि उनकी अब कई नस्लें इधर जर्मनी में रह रही हैं।

उसके बाद Mr. Frank Heinrich साहिब ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। उनका सम्बन्ध CDU पार्टी से है और वह नैशनल असैंबली के मैंबर हैं। महोदय ने अपने निवेदन में सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रिहिल अज़ीज़ और फिर समस्त हाज़रीन को मुबारकबाद कहा और सलाम प्रस्तुत किया और साथ ही इस बात का शुक्रिया अदा किया कि उन्हें और इसी तरह बहुत से अन्य नैशनल असैंबली के मेंम्बरों को भी इस प्रोग्राम में बुलाया गया है।

महोदय ने कहा अगर मैं जमाअत अहमदिया के बारे में सोचता हूँ तो मेरे दिल में दो बिल्कुल विभिन्न भावनाएँ और विचार पैदा होते हैं। एक तरफ़ तो ऐसी भावनाओं का रंग पैदा होता है जो कि शुक्र और ख़ुशी से भरी हो और दूसरी तरफ़ ऐसे विचार पैदा होते हैं जो तकलीफ़ और दुख से भरे होते हैं। इस बात की मैं अब स्पष्टता करना भी ज़रूरी समझता हूँ। जब भी आप लोगों से मुलाक़ात होती है तो आपका यह माटो स्पष्ट होता है कि "मुहब्बत सबके लिए और नफ़रत किसी से नहीं" फिर जब मुझे आपके जलसा सालाना जर्मनी में बुलाया गया और मुझे इसमें शामिल होने का अवसर भी मिला जहां लगभग 34 हज़ार पुरुष तथा औरतें इकट्ठे थे और वहां भी मुझे बोलने का अवसर दिया गया। इस जलसा के द्वारा मेरी बहुत सी ग़लत-फ़हमियाँ दूर हुईं और मुझ पर इस्लाम की हक़ीक़त स्पष्ट हुई। इस कारण से मैं आप सब का बहुत शुक्र गुज़ार हूं। फिर मैं आप लोगों को शहर Chemnitz से भी जानता हूँ खासतौर पर आपके नए साल की सफाई के हवाला से।

उन्होंने कहा कि दूसरी तरफ़ मेरे दिल में बहुत ही तकलीफ़ होती है जब मैं पाकिस्तान की ख़बरें सुनता हूँ। फिर जब में Erfurt के बारे मैं सोचता हूँ जहां आपको मस्जिद बनाने के हवाला से मुश्किलें हैं तो इस से भी मुझे दुःख होता है।

महोदय मेम्बर पार्लीमैंट Heinrich साहिब ने और अधिक कहा मैं पहले पादरी भी रहा हूँ और मेरे निकट एक बात जिसका पहले भी वर्णन हो चुका है निहायत ज़रूरी है। और वह यह कि केवल बातें ही न की जाएं बल्कि बातों के अनुसार कर्म भी नज़र आने चाहिऐं। और यह बात आपकी जमाअत में मुझे देखने को मिलती है। मुझे बहुत ही ख़ुशी है कि ख़लीफ़ा के मार्गदर्शन में आप लोग इस्लाम की शिक्षा दोबारा लोगों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं और उन क़दरों को स्थापित कर रहे हैं और यह पैग़ाम लोगों तक पहुंचा रहे हैं। आप लोग हक़ीक़त में अन्य समस्त धार्मिक जमाअतों से विभिन्न हैं। मुझे इस बात की भी ख़ुशी है और उम्मीद है कि ऐसे प्रोग्राम जिस तरह का आज आप लोग आयोजित कर रहे हैं मशहूर भी किए जाएं और लोगों को इस बारे में पता चले।

इसके बाद Omid Nouripour साहिब ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। महोदय का सम्बन्ध Grne पार्टी से है और यह नैशनल असैंबली के मेम्बर और इसी तरह वज़ारत ख़ारजा के प्रतिनिधि हैं।

उन्होंने सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रिहिल अज़ीज़ को मुबारकबाद कहा और यह भी कहा कि उनके लिए यह एक बहुत ख़ुशी का अवसर है कि वह इस आयोजन में शामिल हो रहे हैं।

महोदय ने कहा कि आजकल अक्सर यह सवाल पैदा होता है कि कौन मुसलमान है और कौन नहीं बल्कि यह बात केवल इस्लाम तक सीमित नहीं रही बल्कि यह भी सवाल उठता है कि कौन मोमिन है और कौन नहीं। लेकिन यह एक ऐसा सवाल है जिसका जवाब प्रत्येक को अपनी ज़ात के लिए ख़ुद देना चाहिए न कि कोई दूसरा किसी के बारे में यह फ़ैसला करे। किसी को गुनाहगार कह देना या किसी से मतभेद करना ठीक है लेकिन किसी को ग़ैर मुस्लिम कहना, या किसी को काफ़िर कहना

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तलहा और ज़ुबैर जन्नत में मेरे पड़ोसी होंगे। हज़रत ज़ुबैर रज़ि धर्म के स्तम्भों में से एक स्तम्भ हैं। (हज़रत उमर रज़ि)

कातिबे वह्यी, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हवारी और महान बदरी सहाबी हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ी अल्लाह अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

तीन मरहूमीन आदरणीय अल्हाज इब्राहीम मुबाइअ साहिब (नायब अमीर तृतीय गेम्बिया), आदरणीय नईम अहमद ख़ान साहिब (नायब अमीर कराची) और आदरणीया बुशरा बेगम साहिबा पत्नी ठेकेदार वली मुहम्मद साहिब मरहूम आफ़ जर्मनी का ज़िक्रे ख़ैर और जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 4 सितम्बर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛ لِلَّذِيْنَ
اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ۔

(आले इम्रान 173)

कि जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल का हुक्म अपने ज़ख़्मी होने के बाद भी स्वीकार किया उनमें से उनके लिए जिन्होंने अच्छी तरह अपना फ़र्ज़ अदा किया है और तक़्वा धारण किया है बड़ा बदला है।

सहाबा का वर्णन चल रहा था और हज़रत ज़ुबैर रज़ि का वर्णन कुछ बाक़ी था जो मैं ने बयान करना था आज वही बयान करूँगा। इस आयत के बारे में जो मैं ने अभी पढ़ी है बयान फ़रमाते हुए हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा ने अपने भांजे उर्वा से कहा कि हे मेरे भांजे तुम्हारे अब्बा ज़ुबैर और अबू बकर रज़ि इसी आयत में वर्णित सहाबा में से थे। जब जंग उहद में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ख़्मी हुए और मुश्रकीन पलट गए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस बात का ख़तरा महसूस हुआ कि वे कहीं फिर लौट कर हमला न करें। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनका पीछा करने कौन-कौन जाएगा। उसी वक़्त उनमें से 70 सहाबा तैयार हो गए। रावी कहते हैं कि अबू बकर रज़ि और ज़ुबैर रज़ि भी उनमें शामिल थे। यह सही बुख़ारी की रिवायत है और ये दोनों हज़रत अबू बकर रज़ि भी और हज़रत ज़ुबैर रज़ि भी ज़ख़्मियों में थे।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मुगाज़ी बाब अलज़ीन असतजाबवा लल्लाआ वालरसूल अलख हदीस4077)

सही मुस्लिम में यह रिवायत इस तरह वर्णन हुई है कि हिश्शाम ने अपने पिता से रिवायत की है वह कहते हैं कि हज़रत आयशा रज़ि ने मुझ से कहा कि तुम्हारे बाप दादा सहाबा में से थे जिन्होंने अपने ज़ख़्मी होने के बाद भी अल्लाह और उसके रसूल की आवाज़ पर लब्बैक कहा।

(सही मुस्लिम किताब फ़ज़ाइल सहाबा बाब मन फ़ज़ाइल तल्हा वज़्ज़ुबैर रज़ी अल्लाह तआला अन्हुमा हदीस 2418)

हज़रत अली रज़ि बयान फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने कानों से यह फ़रमाते हुए सुना है कि तल्हा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि जन्नत में मेरे पड़ोसी होंगे।

(सुनन अत्तिरमज़ी अबवाबुल मनाक़िब बाब मनाक़िब अबी मुहम्मद तल्हा हदीस 3740)

हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रज़ि वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ि, हज़रत उमर रज़ि, हज़रत उसमान रज़ि, हज़रत अली रज़ि, हज़रत तल्हा रज़ि, हज़रत ज़ुबैर रज़ि,हज़रत सअद रज़ि,हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि और हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि का मुक़ाम ऐसा था कि मैदाने जंग में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगे आगे लड़ते थे और नमाज़ में आप के पीछे खड़े होते थे।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 478 सईद बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ से रिवायत है कि वह मस्जिद में थे कि एक शख़्स ने हज़रत अली रज़ि का वर्णन किया, उनकी शान में कुछ अपमान किया तो हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि खड़े हो गए और फ़रमाया कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर गवाही देता हूँ कि यह बेशक मैं ने आप से सुना और आप फ़रमाते थे कि दस आदमी जन्नत में जाऐंगे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जन्नत में होंगे। अबू बकर रज़ि जन्नत में होंगे। हज़रत उमर रज़ि जन्नत में होंगे। हज़रत उसमान रज़ि जन्नत में होंगे। हज़रत अली रज़ि जन्नत में होंगे। हज़रत तल्हा रज़ि, हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि ,हज़रत सअद बिन मालिक रज़ि ,हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि जन्नत में होंगे। और अगर मैं चाहूँ तो दसवें का नाम भी ले सकता हूँ । रावी कहते हैं कि लोगों ने कहा कि दसवाँ कौन है? हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि कुछ देर ख़ामोश रहे। रावी कहते हैं कि कुछ लोगों ने फिर पूछा कि दसवाँ कौन है? फ़रमाया कि सईद बिन ज़ैद रज़ि अर्थात मैं ख़ुद।

(सुनन अबी दाऊद किताबुस्सनत बाब फिलख़ुलफा हदीस 4649)

यह रिवायत हज़रत तल्हा रज़ि के अन्तर्गत भी मेरा ख़्याल है वर्णन हो चुकी है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि कातबीन वह्य के नाम वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो वह्यी नाज़िल होती थी वह उसी वक़्त लिखवा दी जाती थी। अतः रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिन क़ातिबों को क़ुरआन करीम लिखवाते थे उनमें से निम्निलिखत 15 नाम इतिहास से साबित हैं।

"ज़ैद बिन साबित रज़ि, अबी बिन कअब रज़ि, अब्दुल्लाह बिन सअद बिन अबी सरह रज़ि, ज़ुबैर बिन अल्अवाम रज़ि, ख़ालिद बिन सईद बिन अलआस रज़ि, अबान बिन सईद अल-आस रज़ि, हनज़लह बिन अल-रबीअ अल-असदी रज़ि, मुअयैकिब बिन अबी फ़ातिमा रज़ि, अब्दुल्लाह बिन अर्क़म अज़्ज़ुहरी रज़ि, शुरहबील बिन हसना रज़ि, अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि, हज़रत अबू बकर रज़ि, हज़रत उमर रज़ि, हज़रत उसमान रज़ि, हज़रत अली रज़ि। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुरआन शरीफ़ नाज़िल होता तो आप उन लोगों में से किसी को बुला कर वह्य लिखवा देते थे।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन अन्वारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 425-426)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि को एक जंग के अवसर पर ख़ारिश के कारण से रेशम की क़मीज़ पहनने की इजाज़त दी थी।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल जिहाद वस्सैर बाबुल हरीर फिल हर्बे हदीस 2919)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब मदीना में मकानों की हदबंदी की तो हज़रत ज़ुबैर रज़ि के लिए ज़मीन का बड़ा टुकड़ा निर्धारित किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि को खजूर का एक बाग़ भी दिया।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 76 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि को ज़मीन हिबा करने के बारे में वर्णन फ़रमाते हुए

कहते हैं कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि को सरकारी ज़मीनों में से एक इतना बड़ा टुकड़ा प्रदान फ़रमाया जिसमें कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि का घोड़ा आख़िरी सांस तक दौड़ सके अर्थात जिस हद तक वह दौड़ सकता था दौड़ जाए। हज़रत ज़ुबैर रज़ि का घोड़ा जिस जगह पर जा कर खड़ा हुआ वहां से उन्होंने अपना कूड़ा बड़े ज़ोर से ऊपर फेंका और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ैसला फ़रमाया कि न सिर्फ इस हद तक ज़मीन उनको दी जाए जहां उनका घोड़ा जा कर खड़ा हो गया था बल्कि जहां उनका कूड़ा गिरा था उस हद तक उनको ज़मीन दी जाए। आप लिखते हैं कि हमारे देश का घोड़ा भी मीलों दौड़ सकता है और अरब का घोड़ा तो बहुत ज़्यादा तेज़ होता है। अगर चार पाँच मील भी घोड़े की दौड़ रखी जाए तो बीस हज़ार एकड़ के क़रीब ज़मीन बनती है जो उनको दी गई थी।

इमाम अबू यूसुफ़ किताबुल ख़िराज में लिखते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि को एक ज़मीन का टुकड़ा बख़्शा जिसमें खजूर के दरख़्त भी लगे हुए थे और यह हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ि ने भी इमाम अब्बू यूसुफ़ के बयान का हवाला दिया। कहते हैं कि जो ज़मीन का टुकड़ा बख़्शा था इस में खजूर के दरख़्त भी लगे हुए थे और वह किसी वक़्त यहूदी क़बीला बनू नज़ीर की मिल्कियत में से था और उनको जुज़्फ कहते थे, यह जुज़्फ जो है यह मदीना से शाम की तरफ़ तीन मील की दूरी पर एक जगह का नाम है। अर्थात वह जुज़्फ एक स्थायी गांव था। जब हम पहली हदीसों से इस हदीस को मिलाएं अर्थात जहां घोड़े के दौड़ने का ज़िक्र है और लगभग पंद्रह बीस हज़ार एकड़ बनती है तो इस से यह नतीजा निकलता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि को उस वक़्त ऊपर वाली ज़मीन प्रदान की जबकि वह पहले से एक गांव के मालिक थे जिसमें खजूर के बाग़ थे।

(उद्धरित इस्लाम और मिल्कियत ज़मीन,अन्वारुल उलूम भाग 21पृष्ठ 429)
(मुअजमुल बुलदान भाग 2पृष्ठ 149 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत)

उरवा बिन ज़ुबैर से रिवायत है कि मरवान बिन हक्म ने बताया कि जिस साल नक्सीर की बीमारी फैली हज़रत उसमान बिन अफ्फान रज़ि को भी सख़्त नक्सीर हुई यहां तक कि उसने उनको हज से रोक दिया और उन्होंने वसीयत कर दी तो उस वक़्त क़ुरैश में से एक शख़्स उनके पास आया और कहने लगा किसी को ख़लीफ़ा निर्धारित कर दें। अर्थात बहुत ख़राब हालत है। उन्होंने पूछा क्या लोगों ने यह बात कही है? उसने कहा हाँ। हज़रत उसमान रज़ि ने पूछा किस को ख़लीफ़ा बनाना चाहते हैं? वह ख़ामोश रहा। इतने में फिर एक और शख़्स उनके पास आया। रावी कहते हैं मैं समझता हूँ कि वह हारिस था। कहने लगा ख़लीफ़ा निर्धारित कर दें। हज़रत उसमान रज़ि ने कहा क्या लोगों ने यह कहा है? उसने कहा हाँ। हज़रत उसमान रज़ि ने पूछा अर्थात कि आप के बाद कौन ख़लीफ़ा हो? हज़रत उसमान रज़ि ने पूछा वह कौन है जो ख़लीफ़ा होगा। वह ख़ामोश रहा। हज़रत उसमान रज़ि ने उस से कहा शायद वह ज़ुबैर को चुनने का कहते हैं। उसने कहा हाँ। हज़रत उसमान रज़ि ने कहा कि उस ज़ात की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है जहां तक मुझे इलम है वह अर्थात हज़रत ज़ुबैर रज़ि उन लोगों में से यक़ीनन बेहतर हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी सबसे ज़्यादा प्यारे थे।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाब मनाक़िब अज़्ज़ुबैर बिन अल्अवाम हदीस 3717)

हज़रत ज़ुबैर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो वर्णन फ़रमाया करते थे कि एक बार उनका एक अन्सारी सहाबी से जो जंगे बदर में शामिल होने वालों में से थे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मौजूदगी में पानी की नाली में राय का मतबेद हो गया जिससे वे दोनों अपने खेत को सेराब करते थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बात को ख़त्म करते हुए फ़रमाया कि ज़ुबैर तुम अपने खेत को सेराब करके अपने पड़ोसी के लिए पानी छोड़ दो। अन्सारी को यह बात पसन्द न आई और वह कहने लगा हे रसूलुल्लाह यह आप के फूफेरे भाई हैं न। इसलिए आप यह फ़ैसला फ़र्मा रहे हैं। इस पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक चेहरे का रंग बदल गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से फ़रमाया कि अब तुम अपने खेत को सेराब करो और जब तक पानी मुंडेर तक न पहुंच जाए उस वक़्त तक पानी को रोके रखो। गोया अब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि को उनका पूरा हक़ दिलवा दिया जबकि इससे पहले नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर को ऐसा मश्वरा दिया था जिसमें उनके लिए और अन्सारी के लिए गुंजाइश और वुसअत का पहलू था लेकिन जब अन्सारी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैसले पर नाराज़गी का इज़हार किया तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सही हुक्म के साथ हज़रत ज़ुबैर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो को उनका पूरा हक़ दिलवाया। हज़रत ज़ुबैर रज़ि फ़रमाते हैं कि अल्लाह की कसम मैं यह समझता हूँ कि नीचे लिखी आयत इसी घटना के बारे में नाज़िल हुई है ।

فَلَا وَ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(अलनिसा-ए-66)

अर्थात नहीं तेरे रब की क़सम वह कभी ईमान नहीं ला सकते जब तक वे तुझे इन बातों में मुंसिफ़ न बना लें जिनमें उनके बीच झगड़ा हुआ है। फिर तो जो भी फ़ैसला करे उस के बारे में वे अपने दिलों में कोई तंगी न पाएं और पूर्ण आज्ञापालन धारण करें।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 1 पृष्ठ 453 मस्नद ज़ुबैर बिन अल्अवाम हदीस1419 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

हज़रत ज़ुबैर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि जब यह आयत नाज़िल हुई

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ (अज़्ज़ुमर 32)

अर्थात निसन्देह तुम क़यामत के दिन अपने रब के हुज़ूर एक दूसरे से बेहस करोगे। तो उन्होंने पूछा हे रसूलुल्लाह क्या हमारी दुनियावी लड़ाईयां तात्पर्य हैं? नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। फिर जब यह आयत नाज़िल हुई

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ (अत्तक़ासुर 9)

अर्थात उस दिन तुम नेअमतों के बारे में ज़रूर पूछे जाओगे। तो हज़रत ज़ुबैर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने पूछा हे रसूलुल्लाह हम से किन नेअमतों के बारे में सवाल होगा जबकि हमारे पास तो सिर्फ खजूर और पानी है? नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ख़बरदार ये नेअमतों का ज़माना भी शीघ्र आने वाला है। (मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 1पृष्ठ 449 मस्नद ज़ुबैर बिन अल्अवाम हदीस 1405 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई) आज तो यह तंगी है। इंशा अल्लाह अमीरी भी आने वाली है।

हफ़्स बिन ख़ालिद कहते हैं कि मुझे उस बुज़ुर्ग ने यह हदीस बयान की है जो कि मूसिल (यह मूसिल जो है शाम का मशहूर शहर है जो अपनी घनी आबादी और बड़े क्षेत्रफल की दृष्टि से उस वक़्त के इस्लामी देशों में बहुत प्रमुख था। समस्त शहरों से वहां लोग आया करते थे। यह नेनवा के क़रीब दजला के किनारे से 222 मील की दूरी पर स्थित है। इस शहर का परिचय तो यह है जो फरहंग में लिखा गया है लेकिन बहरहाल वह कहते हैं मूसिल) स्थान से हमारे पास आते थे। वह कहते हैं कि मैं ने हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि के साथ कुछ सफ़र किए हैं। एक बार का वर्णन है कि एक सेहरा में उनको नहाने की ज़रूरत हो गई। उन्होंने मुझसे कहा कि मेरे लिए पर्दा करो। मैं ने उनके लिए कपड़े से पर्दा किया। वह नहाने लग गए। अचानक मेरी निगाह उनके जिस्म पर पड़ गई। मैं ने देखा कि उनका सारा जिस्म तलवारों के ज़ख़्मों के निशानों से छलनी था। मैंने उनसे कहा ख़ुदा की क़सम मैं ने आप के जिस्म पर ज़ख़्मों के ऐसे निशान देखे हैं जो आज से पहले मैं ने कभी किसी के जिस्म पर नहीं देखे। उन्होंने जवाब में कहा क्या तुमने मेरे जिस्म के ज़ख़मों के निशान देख लिए हैं? फिर फ़रमाया ख़ुदा की क़सम! ये सारे ज़ख़्म मुझे अल्लाह की राह में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग करते हुए आए हैं।

(मुस्तदरिक अलस्सहीहैन लिल्हाकिम भाग 3 पृष्ठ 406 किताब मअरफतिस्सहाबा हदीस 5550 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2002 ई) (फ़र्हंग सीरत लेखक सय्यद फ़ज़लुर्रहमान पृष्ठ 288)

हज़रत उसमान रज़ि, हज़रत मिकदाद रज़ि, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि को वसीयत कर रखी थी। अत: वह इन अहबाब के माल की हिफ़ाज़त करते और अपने माल से उनके बच्चों पर ख़र्च करते थे। माल की अधिकता थी तो उनका माल बच्चों पर ख़र्च नहीं करते थे। अपने पास से ख़र्च करते थे ताकि बाद में यह माल उन लोगों के काम आए । हज़रत ज़ुबैर रज़ि को कोई लालच नहीं थी।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि के बारे में आता है कि उनके एक हज़ार ग़ुलाम थे जो उन्हें ख़िराज अर्थात ज़मीन की पैदावार अदा करते थे। वह इस में से घर कुछ भी न लाते और सारा सदक़ा कर देते।

मुतीअ बिन असवद वर्णन करते हैं कि मैंने हज़रत उमर रज़ि को यह फ़रमाते हुए

सुना कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि धर्म के स्तम्भों में से एक स्तम्भ हैं।

(अलअसाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 460 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1995 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि से रिवायत है कि जब हज़रत ज़ुबैर रज़ि जंगे जमल के दिन खड़े हुए तो उन्होंने मुझे बुलाया। मैं उनके पहलू में खड़ा हो गया। उन्होंने कहा कि हे प्यारे बेटे आज या तो ज़ालिम को क़तल किया जाएगा या मज़लूम। ऐसा नज़र आता है कि आज मैं पीड़ित की हालत में क़तल किया जाऊँगा। मुझे सबसे बड़ी फ़िक्र अपने क़र्ज़ की है। क्या तुम्हारी राय में हमारे क़र्ज़ से कुछ माल बच जाएगा? फिर कहा कि हे बेटे! माल बेच कर क़र्ज़ अदा कर देना और मैं तीसरे हिस्से की वसीयत करता हूँ, तीसरे हिस्से की वसीयत करता हूँ और क़र्ज़ अदा करने के बाद अगर कुछ बचे तो इस में से एक तिहाई तुम्हारे बच्चों के लिए है। उनके बच्चों को बाक़ी के इलावा दिया। हिशाम ने कहा अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि के लड़के उम्र में हज़रत ज़ुबैर रज़ि के लड़कों ख़ुबैब और इबाद के बराबर थे। अर्थात अब्दुल्लाह के लड़के हज़रत ज़ुबैर रज़ि के अपने लड़कों के बराबर थे। बेटे के बच्चे जो थे वह भी उसके भाईयों के बराबर थे। उस ज़माने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि की नौ बेटियां थीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि वर्णन करते हैं कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि मुझे अपने क़र्ज़ की वसीयत करने लगे कि हे मेरे बेटे अगर इस क़र्ज़ में से तुम कुछ अदा करने से आजिज़ हो जाओ तो मेरे मौला से मदद लेना। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि कहते हैं। मैं ''मौला' से उनकी मुराद नहीं समझा। मैं ने पूछा कि आपका मौला कौन है? तो हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने कहा अल्लाह। फिर जब कभी मैं उनके क़र्ज़ की मुसीबत में पड़ा तो कहा हे ज़ुबैर रज़ि के मौला उनका क़र्ज़ अदा कर दे और वह अदा कर देता अर्थात अल्लाह तआला फिर कोई प्रबन्ध कर देता था। इस क़र्ज़ की अदायगी के सामान पैदा कर देता था। जायदाद तो थी उस में से ही अदा हो जाते थे।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि इस अवस्था में शहीद हुए कि उन्होंने न कोई दीनार छोड़ा न दिरहम सिवाए कुछ ज़मीनों के जिन में ग़ाबा भी था। मदीना में ग्यारह मकान थे। दो मकान बस्रा में थे। एक मकान कूफ़ा में और एक मकान मिस्र में था। हज़रत ज़ुबैर रज़ि मक़रूज़ इस तरह हुए कि लोग उनके पास माल लाते कि अमान में रखें परन्तु हज़रत ज़ुबैर रज़ि कहते कि नहीं बल्कि यह क़र्ज़ है क्योंकि मुझे उस के नष्ट होने का अंदेशा है। ये पैसे अमानत के रूप में नहीं रखूँगा। मैं तुम्हारे से इस तरह वसूल करता हूँ जिस तरह कि यह क़र्ज़ होता है। ख़र्च भी कर लेते थे उस में से या और कोई ख़तरा हो तो वह भी महफ़ूज़ हो जाए इसलिए आप उनको बताते थे कि यह क़र्ज़ की सूरत में ले रहा हूँ जो मैं वापस करूँगा। बहरहाल हज़रत ज़ुबैर रज़ि कभी अमीर न बने चाहे माल वसूल करने के लिए या ख़िराज के लिए या किसी और माली ख़िदमत के लिए सिवाए इसके कि किसी जंग में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत अबू बकर रज़ि ,हज़रत उमर रज़ि और हज़रत उसमान रज़ि के साथ जिहाद में शामिल हुए हूँ। जिहाद में ज़रूर शामिल होते थे लेकिन बहुत अमीर जिन्होंने नक़दी की सूरत में पैसा जोड़ा हो वह नहीं हुआ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि ने वर्णन किया कि मैं ने उनके क़र्ज़ का हिसाब किया तो बाईस लाख पाया। हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि से मिले और कहा कि हे मेरे भतीजे मेरे भाई पर कितना क़र्ज़ है? हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि ने छुपाया और कहा कि एक लाख। हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ि ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! मैं तुम्हारे माल को इतना नहीं देखता कि वह उसके लिए काफ़ी हो। ज़ाहरी माल जो नज़र आ रहा था। फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि ने उनसे कहा कि अगर मैं कहूं कि वह क़र्ज़ बाईस लाख है तो आप क्या कहेंगे। इस पर उन्होंने कहा कि मैं तो तुम्हें उसका उतारने वाला नहीं देखता, मुश्किल है अदा कर सको। अगर तुम उसके अदा करने से असमर्थ हो जाओ तो मुझसे मदद ले लेना। अगर न अदा कर सको तो मैं हाज़िर हूँ। मुझे बताना मैं तुम्हें क़र्ज़ अदा कर दूँगा। हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने ग़ाबा एक लाख सत्तर हज़ार में ख़रीदा था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि ने सोला लाख में बेचा। फिर खड़े हो कर कहा कि जिसका ज़ुबैर रज़ि के ज़िम्मा कुछ हो वह हमारे पास ग़ाबा पहुंच जाए। वह ग़ाबा की ज़मीन बेची। 16 लाख उस की क़ीमत मिली और फिर ऐलान कर दिया कि जो क़र्ज़ लेने वाले हैं वे आ जाएं और अपना क़र्ज़ ले लें। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि जिनके हज़रत ज़ुबैर पर चार लाख थे उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि से कहा कि अगर तुम लोग चाहो तो मैं माफ़ कर दूं और अगर चाहो तो उसे इन कर्ज़ों के साथ रखो जिन्हें तुम देर कर रहे हो बशर्ति कि तुम कुछ देर करो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि ने कहा नहीं। उन्होंने कहा कि फिर मुझे एक टुकड़ा ज़मीन का दे दो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि ने कहा कि तुम्हारे लिए यहां से यहां तक है। उन्होंने इस में से बक़दर अदाए क़र्ज़ के बेच दिया और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन जाफ़िर को दे दिया। इस क़र्ज़ में से साढ़े चार हिस्से बाक़ी रह गए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि हज़रत मुआविया रज़ि के पास आए। उस ज़माने की बात है। वहां अमर बिन उस्मान, मुनिज़र बिन ज़ुबैर और इब्ने ज़मअ: थे। हज़रत मुआवया रज़ि ने पूछा कि ग़ाबा की कितनी क़ीमत लगाई गई? हज़रत इब्न ज़ुबैर रज़ि ने कहा हर हिस्सा एक लाख का है। हज़रत मुआवया रज़ि ने पूछा कितने हिस्से बाक़ी रहे? उन्होंने कहा कि साढ़े चार हिस्से। मुनिज़र बिन ज़ुबैर ने कहा कि एक हिस्सा एक लाख में मैंने ले लिया। उमर बिन उसमान ने कहा कि एक हिस्सा एक लाख में मैंने ले लिया। इब्न ज़मआ ने कहा कि एक हिस्सा एक लाख में मैं ने ले लिया। हज़रत मुआविया रज़ि ने कहा अब कितने बच्चे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने कहा कि डेढ़ हिस्सा। उन्होंने कहा कि वह डेढ़ लाख में मैं ने ले लिया। अर्थात कि ग़ाबा की वह ज़मीन जो बाक़ी रह गई थी उस को भी बेचने लगे। अब्दुल्लाह बिन जाफ़िर ने अपना हिस्सा हज़रत मुआविया के हाथ छ: लाख में बैच दिया। बहरहाल जो उन्होंने कहा था कि क़र्ज़ अल्लाह तआला अदा करेगा तो इस तरह अल्लाह तआला सामान पैदा करता था तो वह कुछ जायदाद बेच के क़र्ज़ अदा करते रहे।

जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि हज़रत ज़ुबैर रज़ि का क़र्ज़ अदा कर चुके तो हज़रत ज़ुबैर रज़ि की औलाद ने कहा कि हम में हमारी मीरास बांट दो। अब क़र्ज़ तो सारे अदा हो गए हैं अब जो विरासत है वह बांट दो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि ने कहा कि नहीं अल्लाह की क़सम मैं तुम में उस वक़्त तक नहीं बांटूंगा जब तक चार साल ज़माना हज में एलान न कर लूं अर्थात चार साल तक हर हज के दिन पहले ऐलान करूँगा कि जिसका ज़ुबैर रज़ि पर क़र्ज़ हो वह हमारे पास आए हम उसे अदा करेंगे और चार साल तक हज के अवसर पर मुनादी करते रहे। जब चार साल गुज़र गए तो मीरास हज़रत ज़ुबैर रज़ि की औलाद में बांट दी।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि की चार बीवियां थीं। उन्होंने बीवी के आठवें हिस्से को चार पर विभाजित कर दिया और हर बीवी को ग्यारह लाख पहुंचे। फिर भी जो जो जायदाद बाक़ी रह गई थी इस में से हर कोई जब बांटा गया तो ग्यारह ग्यारह लाख बीवियों को भी मिल गया। उनका पूरा माल तीन करोड़ बावन लाख था।

एक रिवायत में यह है और सुफ़ियान बिन उयायना से रिवायत है कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि की मीरास में चार करोड़ बांटे गए। हिशाम बिन उर्वा ने अपने पिता से रिवायत की कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि के तरका की क़ीमत पाँच करोड़ बीस लाख या पाँच करोड़ दस लाख थी। इसी तरह उर्वा से रिवायत है कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि की मिस्र में कुछ ज़मीनें थीं और सिकंदरीया में कुछ ज़मीनें थीं। कूफ़ा में कुछ ज़मीनें थीं और बसरा में मकान थे। उनकी मदीना की कुछ जायदाद की आय थी जो उन के पास आती थी।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 80-81 ज़ुबैर बिन अल्अवामदारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1990 ई) बहरहाल ये सारे क़र्ज़ उतार के तो फिर इन जायदादों में से जो बाक़ी जायदादें थीं वो उनके विरसा में बांटी गईं।

मुतर्रिफ कहते हैं कि एक बार हमने हज़रत ज़ुबैर रज़ि से कहा कि हे अबू अब्दुल्लाह आप लोग किस उद्देश्य के लिए आए हैं। आप लोगों ने एक ख़लीफ़ा को नुक्सान पहुंचाया यहां तक कि वह शहीद हो गए। अब आप उनके क़िसास की मांग कर रहे हैं। हज़रत ज़ुबैर रज़ी अल्लाह अन्हो ने फ़रमाया कि हम नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत अबू बकर, हज़रत उम्र और हज़रत उसमान ग़नी रज़ी अल्लाह तआला अन्हुम के ज़माना में क़ुरआन करीम की यह आयत पढ़ा करते थे कि

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَاصَّةً

(अल-अनफ़ाल26)

कि और इस फ़ित्ने से डरो जो केवल उन लोगों को ही नहीं पहुँचेगा जिन्होंने तुम में से ज़ुल्म किया (बल्कि उमूमी होगा) लेकिन हम यह नहीं समझते थे कि इस का इतलाक़ हम पर ही होगा यहां तक कि हम पर यह आज़माईश आएगी।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल भाग 1 पृष्ठ 451 मस्नद ज़ुबैर बिन अल्अवाम हदीस 1414 आलेमुल कुतुब बेरूत1998 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो हज़रत अली रज़ि की ख़िलाफ़त के चुनाव के हालात वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि जब हज़रत उसमान रज़ि की शहादत की घटना हुई और वह सहाबा रज़ि जो मदीना में मौजूद थे उन्होंने यह देखकर कि मुसलमानों में फ़ित्ना बढ़ता जा रहा है हज़रत अली रज़ि पर ज़ोर दिया

कि आप लोगों की बैअत लें। दूसरी तरफ़ कुछ मुफ़सदीन भाग कर हज़रत अली रज़ि के पास पहुंचे और कहा कि इस वक़्त इस्लामी हुकूमत के टूट जाने का सख़्त भय है आप लोगों से बैअत लें ताकि उनका ख़ौफ़ दूर हो और अमन तथा अमान स्थापित हो। अत: जब आप को बैअत लेने पर मजबूर किया गया तो कई बार के इन्कार के बाद आप ने इस ज़िम्मेदारी को उठाया और लोगों से बैअत लेनी शुरू कर दी। कई बड़े बड़े सहाबा उस वक़्त मदीना से बाहर थे। कुछ से तो जबरन बैअत ली गई अत: हज़रत तल्हा रज़ि और हज़रत ज़ुबैर रज़ि के बारे में आता है कि उनकी तरफ़ हकीम बिन जबला और मालिक अशतर को कुछ आदमियों के साथ रवाना किया गया और उन्होंने तलवारों का निशाना करके उन्हें बैअत पर तैय्यार किया अर्थात वे तलवारें सौंत कर उनके सामने खड़े हो गए और कहा कि हज़रत अली रज़ि की बैअत करनी है तो करो वर्ना हम अभी तुमको मार डालेंगे यहां तक कि कुछ रिवायतों में यह वर्णन भी आता है कि वह उनको निहायत सख़्ती के साथ ज़मीन पर घसीटते हुए लाए। ज़ाहिर है कि ऐसी बैअत कोई बैअत नहीं कहला सकती। फिर जब उन्होंने बैअत की तो यह भी कह दिया कि हम इस शर्त पर आप की बैअत करते हैं कि हज़रत उसमान रज़ि के क़ातिलों से आप क़िसास लेंगे परन्तु बाद में जब उन्होंने देखा कि हज़रत अली रज़ि क़ातिलों से क़िसास लेने में जल्दी नहीं कर रहे तो वे बैअत से अलग हो गए और मदीना से मक्का चले गए। इन्ही लोगों की एक जमाअत ने जो हज़रत उसमान रज़ि के क़त्ल में शामिल थी हज़रत आयशा रज़ि को इस बात पर तैय्यार कर लिया कि आप हज़रत उसमान रज़ि के ख़ून का बदला लेने के लिए जिहाद का ऐलान कर दें। अत: उन्होंने इस बात का ऐलान किया और सहाबा को अपनी मदद के लिए बुलाया। हज़रत तल्हा रज़ि और हज़रत ज़ुबैर रज़ि भी उनके साथ शामिल हो गए और इसके नतीजा में हज़रत अली रज़ि और हज़रत आयशा रज़ि, हज़रत तल्हा रज़ि और हज़रत ज़ुबैर रज़ि के लश्कर में जंग हुई जिसे जंगे जमल कहा जाता है। इस जंग के शुरू में ही हज़रत ज़ुबैर रज़ि हज़रत अली रज़ि की ज़ुबान से रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक पेशगोई सुनकर अलग हो गए थे। हज़रत ज़ुबैर रज़ि तो शुरू में ही अलग हो गए थे और उन्होंने क़सम खाई कि वह हज़रत अली रज़ि से जंग नहीं करेंगे और इस बात का इक़रार किया कि अपने इजतिहाद में उन्होंने ग़लती की थी, जो समझा था इस से ग़लती हो गई। दूसरी तरफ़ हज़रत तल्हा रज़ि ने भी अपनी वफात से पहले हज़रत अली रज़ि की बैअत का इक़रार कर लिया था क्योंकि रिवायत में आता है कि वह ज़ख़्मों की शिद्दत से तड़प रहे थे कि एक शख़्स उनके पास से गुज़रा। उन्होंने पूछा तुम किस गिरोह में से हो? उसने कहा हज़रत अली रज़ि के गिरोह में से। इस पर उन्होंने अपना हाथ उस के हाथ में देकर कहा कि तेरा हाथ अली रज़ि का हाथ है और मैं तेरे हाथ पर हज़रत अली रज़ि की दोबारा बैअत हूँ।

(उद्धरित ख़िलाफ़त राशिदा ,पृष्ठ 44-45 अन्वारुल उलूम भाग 15)

बहरहाल हज़रत ज़ुबैर रज़ि के बारे में लिखा है कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि की शहादत जंग जमल से वापसी पर हुई थी। वहां से तो वह अलग हो गए थे और हज़रत अली रज़ि से जंग का उन्होंने जो इरादा किया तो उन्होंने कहा मैंने ग़लती की है और इस से बिल्कुल अलग हो गए लेकिन जंग जमल से वापसी पर उनकी शहादत हुई। जब हज़रत अली रज़ि ने उन्हें याद दिलाया कि मैं तुम्हें अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूँ कि क्या तुमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना है कि तुम अली रज़ि से लड़ोगे और ज़्यादती तुम्हारी तरफ़ से होगी। उन्होंने कहा हाँ और यह बात मुझे अभी याद आई है फिर वहां से चले गए। हज़रत अली रज़ि से जंग से अलग होने का यह कारण बना था। इस की तफसीर जो है वह हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह रज़ि के वर्णन में बयान हो चुकी है जिससे स्पष्ट हो जाता है कि मुफ़सदीन और मुनाफ़क़ीन की भड़काई हुई आग थी जिसमें अधिकतर सहाबा ग़लतफ़हमी के कारण से शामिल हो गए थे। बहरहाल जो भी था वह ग़लत हुआ।

हरब बिन अबू अल्असवद कहते हैं कि मैं हज़रत अली रज़ि और हज़रत ज़ुबैर रज़ि से मिला हूँ। जब हज़रत ज़ुबैर रज़ि अपनी सवारी पर सवार हो कर सफ़ों को चीरते हुए वापस लौटे तो उनके बेटे अब्दुल्लाह रज़ि उनके सामने आए और कहने लगे कि आपको क्या हुआ? हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने उनसे कहा हज़रत अली रज़ि ने मुझे एक हदीस याद करा दी जिसको मैं ने ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़बान से सुना है। आप ने फ़रमाया था तू इस अर्थात हज़रत अली रज़ि से जंग करेगा और इस जंग में तू ज़ुल्म करने वाला होगा। इसलिए मैं उनसे जंग नहीं करूँगा। उनके बेटे ने कहा कि आप तो इसलिए आए हैं कि लोगों के बीच सुलह कराएं और अल्लाह आप के हाथ से इस मामले में सुलह करवाएगा। हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने कहा मैं तो कसम खा चुका हूँ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि ने कहा आप इस किस्म का कफ़्फ़ारा दे दें और अपने ग़ुलाम जिरजिस को आज़ाद कर दें और इधर ही मौजूद रहें यहां तक कि अल्लाह उन लोगों में सुलह करवा दे। रावी कहते हैं कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने अपने ग़ुलाम जिरजिस को आज़ाद किया और वहीं ठहरे रहे। लेकिन लोगों में मतभेद और अधिक बढ़ गए तो आप अपने घोड़े पर सवार हो कर चले गए। जब हज़रत ज़ुबैर रज़ि मदीना की तरफ़ वापसी का इरादा करके निकले और सफ़ नामी सथान पर पहुंचे जो बस्रा के क़रीब एक स्थान है तो बक्र नामक एक व्यक्ति जो बनू मुजाशिअ से था हज़रत ज़ुबैर रज़ि को मिला। उसने कहा कि हे हवारी रसूलुल्लाह ! आप कहाँ जा रहे हैं? आप मेरी ज़िम्मेदारी हैं। आप तक कोई शख़्स नहीं पहुंच सकता। वह शख़्स हज़रत ज़ुबैर रज़ि के साथ चल पड़ा और एक आदमी अहनफ बिन क़ैस से मिला। उसने कहा कि यह ज़ुबैर हैं जो मुझे सफ़ में मिले थे। अहनफ ने कहा कि मुसलमानों के दो गिरोह आपस में गुत्थम गुत्था हैं और तलवारों से एक दूसरे का माथे काट रहे हैं और यह अपने बेटे और घर वालों से मिलने जाते हैं। जब उमैर बिन जुरमूज़ और फ़ज़ालह बिन हाबिस और नुफ़िय्या ने यह बात सुनी तो उन्होंने सवार हो कर हज़रत ज़ुबैर रज़ि का पीछा किया और उनको एक क़ाफ़िला के साथ पा लिया। उमैर बिन जुरमूज़ घोड़े पर सवार हो कर उनके पीछे से आया और हज़रत ज़ुबैर रज़ि पर नेज़े से हमला किया और हल्का सा ज़ख़्म दिया। हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने भी जो उस वक़्त ज़ूलख़िमर नामक घोड़े पर सवार थे उस पर हमला किया। जब इब्ने जुरमूज़ ने देखा कि वह क़तल होने वाला है तो उसने अपने दोनों साथियों को आवाज़ दी और उन्होंने मिलकर हमला किया यहां तक कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि को शहीद कर दिया।

एक रिवायत में आता है कि जब हज़रत ज़ुबैर अपने क़ातिल के सामने आए और इस पर ग़ालिब भी आ गए लेकिन इस दुश्मन ने कहा मैं तुम्हें अल्लाह की कसम देता हूँ। यह सुनकर हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने अपना हाथ रोक लिया। उस आदमी ने यह काम कई बार किया। फिर जब हज़रत ज़ुबैर रज़ि के ख़िलाफ़ उसने बग़ावत की और उनको ज़ख़्मी कर दिया तो हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने कहा अल्लाह तुझे अपमानित करे तुम मुझे अल्लाह की कसम देते रहे और ख़ुद उस को भूल गए। हज़रत ज़ुबैर रज़ि को शहीद करने के बाद इब्ने जुरमूज़ हज़रत अली रज़ि के पास हज़रत ज़ुबैर रज़ि का सिर और उनकी तलवार लाया। हज़रत अली रज़ि ने तलवार ले ली और कहा कि यह वह तलवार है कि अल्लाह की क़सम ! इस से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे से बेचैनी दूर हुई लेकिन अब ये मौत और फ़साद की क़त्ल गाहों में है। इब्ने जुरमूज़ ने अंदर आने की इजाज़त मांगी। दरबान ने निवेदन किया कि यह इब्ने जुरमूज़ जो हज़रत ज़ुबैर रज़ि का क़ातिल है। दरवाज़े पर खड़ा आज्ञा माग रहा है। हज़रत अली रज़ि ने फ़रमाया कि इब्ने सफिय्या, हज़रत ज़ुबैर रज़ि को शहीद करने वाला दोज़ख़ में दाख़िल हो। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि हर नबी के हवारी हैं और मेरा हवारी ज़ुबैर रज़ि है। हज़रत ज़ुबैर रज़ि वादी सिबाअ में दफ़्न किए गए। हज़रत अली रज़ि और उनके साथी बैठ कर आप पर रोने लगे। शहादत के समय हज़रत ज़ुबैर रज़ि की उम्र चौंसठ साल थी। कुछ के नज़दीक आपकी उम्र छयासठ या सतासठ वर्ष थी।

(मुस्तदिरक अलस्सहीहैन लिल्हाकिम भाग 3 पृष्ठ 413 हदीस 5575 बाब मारेफतिस्सहाबा दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत)(अल्इस्तियाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 516 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल जैल बेरूत 1996 ई)(मुस्तदरिक अलस्सहीहैन लिल्हाकिम भाग 3 पृष्ठ 412 हदीस 5571 बाब मअरफतिस्सहाबा दारुल कुतुब अल्अरिबया बेरूत)(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 78 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 83 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1990)(अलासाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 460 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1995 ई)

हज़रत आतिका बिन्त ज़ैद जो हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि की बीवी थीं उनके बारे में मदीना वाले कहा करते थे कि जो व्यक्ति शहादत चाहे वह आतका बिन्त ज़ैद से निकाह कर ले। यह पहले अब्दुल्लाह बिन अबी बकर के निकाह में आईं वह शहीद हो कर उनसे जुदा हो गए। फिर हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि के निकाह में आईं। वह भी शहीद हो कर उनसे जुदा हो गए। फिर हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि के निकाह में आईं। वह भी शहीद हो कर उनसे जुदा हो गए।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि की शहादत पर हज़रत आतिकह रज़ि ने ये अशआर कहे थे कि

غَدَرَ ابْنُ جُرْمُوزٍ بِفَارِسِ بُهْمَةٍ
يَوْمَ اللِّقَاءِ وَ كَانَ غَيْرَ مُعَرَّدِ
يَا عَمْرُو لَوْ نَبَّهْتَهُ لَوَجَدْتَهُ
لَا طَائِشًا رَعِشَ الْجَنَانِ وَلَا الْيَدِ
شَلَّتْ يَمِيْنُكَ إِنْ قَتَلْتَ لَمُسْلِمًا
حَلَّتْ عَلَيْكَ عُقُوْبَةُ الْمُتَعَمِّدِ
ثَكِلَتْكَ أُمُّكَ هَلْ ظَفِرْتَ بِمِثْلِهِ
فِيْمَنْ مَضٰى فِيْمَا تَرُوْحُ وَ تَغْتَدِيْ
كَمْ غَمْرَةٍ قَدْ خَاضَهَا لَمْ يَثْنِهِ
عَنْهَا طِرَادُكَ يَا ابْنَ فَقْعِ الْقَرْدَدِ

अर्थात इब्ने जुरमूज़ ने जंग के दिन उस बहादुर सवार के साथ धोखा किया हालाँकि वह भागने वाला न था। हे उमरो बिन जरमोज़ अगर तू उन्हें आगाह कर देता तो उन्हें इस हालत में पाता कि वह नामर्द न होते जिसका दिल और हाथ काँपता हो। तेरा हाथ शल हो जाए कि तूने एक मुस्लमान को क़त्ल कर दिया। तुझ पर जानबूझ कर क़तल करने का अज़ाब वाजिब हो गया। तेरा बुरा हो क्या उन लोगों में जो इस ज़माने में गुज़र गए जिसमें तू शाम और सुबह करता है तूने कभी उन जैसे किसी और शख़्स पर सफलता पाई है। हे अदना सी तकलीफ़ को सहन न कर सकने वाले। ज़ुबैर तो ऐसा शख़्स था कि कितने ही सख़्त हालात हों वह जंग में व्यस्त रहते थे और हे सफ़ैद चेहरे वाले तुम्हारा नेज़ा मारना उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता था।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 83 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

फिर वहां तबक़ात अल-कुबरा की यह रिवायत है कि जब इब्ने जुरमूज़ ने आकर हज़रत अली रज़ि से आज्ञा चाही तो हज़रत अली रज़ि ने उस से दूरी चाही। इस पर उसने कहा क्या ज़ुबैर रज़ि मुसीबत वालों में से न थे। हज़रत अली रज़ि ने कहा कि तेरे मुँह में ख़ाक मैं तो यह आशा करता हूँ कि तल्हा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि उन लोगों में से होंगे जिनके हक़ में अल्लाह तआला फरमाता है कि

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ
(अल-हिजर 48)

और हम उनके दलों की मैल दूर कर देंगे कि वे तख़्तों पर आमने सामने भाई-भाई हो कर बैठेंगे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 84 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1990)

हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने विभिन्न समयों में कई शादियां कीं और बहुत अधिक औलाद पैदा हुई। उनका विस्तार निम्निलिखत है।

हज़रत अस्मा बिन्त अबू बकर रज़ि उनके गर्भ से अब्दुल्लाह, उर्वा, मुनिज़र, आसिम, ख़दीजतुल कुबरा, उम्मे हसन, आयशा पैदा हुईं।

हज़रत उम्मे ख़ालिद रज़ि उनके गर्भ से जो बच्चे पैदा हुए वह ख़ालिद, अमरो, हबीबा, सौदा, हिन्द हैं।

हज़रत रुबब बिन्त उनैफ़ रज़ि उनके गर्भ से ये बच्चे पैदा हुए। मसअब, हमज़ा, रमला।

हज़रत ज़ैनब उम्मे जाफ़िर बिन्त मरसद: उनके गर्भ से जो बच्चे पैदा हुए वे उबैदा और जाफ़िर हैं।

हज़रत उम्मे कुल्सूम बिन्त उक्बा उनके गर्भ से ज़ैनब पैदा हुईं।

हज़रत हिलाल बिन्त कैस रज़ि उनके गर्भ से ख़दीजा अल्सुग़रा पैदा हुईं।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 74 ज़ुबैर बिन अल्अवाम, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1990 ई) हज़रत आतिका रज़ि बिन्त ज़ैद।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 83 ज़ुबैर बिन अल्अवाम, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1990 ई) ये हैं हज़रत ज़ुबैर रज़ि की सारी घटनाएं। और यहां ख़त्म हुईं।

अब इसके बाद में कुछ मरहूमीन का वर्णन करूँगा जिनका अभी जुम्अ: के बाद जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा। उनमें से पहला वर्णन अल्हाज इब्राहीम मुबाइअ साहिब नायब अमीर सोम गेम्बिया का है जो 10 अगस्त को वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहि वा इन्ना इलैहि राजेऊन।

आप 4 जून 1944 ई को बांजूल में पैदा हुए और भूतपूर्व अमीर जमाअत गेम्बिया आदरणीय चौधरी मुहम्मद शरीफ़ साहिब मरहूम के दौर में 61,62मैं उन्होंने अहमदियत स्वीकार की थी। जमाअत के आरम्भिक मेम्बरों में से थे। पांचों वक़्त के नमाज़ी, तहज्जुद के आदी थे। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसी भी थे। माली क़ुर्बानी में हमेशा सब से आगे रहे। आपके बेटे वर्णन करते हैं कि आपने वफ़ात से पहले भी तहज्जुद की नमाज़ अदा की। पीने के लिए पानी मांगा फिर अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हो गए। मरहूम क़ुरआन करीम के आशिक़ थे। बाक़ायदगी से तिलावते क़ुरआन किया करते थे। महोदय एक लंबे अर्से तक बतौर नायब अमीर धर्म की सेवा की तौफ़ीक़ पाते रहे। इसके साथ साथ बतौर अफ़्सर जलसा सालाना, नेशनल सेक्रेटरी उमूर ख़ारिजा और सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह गेम्बिया भी सेवा की तौफ़ीक़ पाई और मसरूर सेकण्डरी स्कूल के बोर्ड मेम्बर थे।

सरकारी टीचर थे। देश के विभिन्न इलाक़ों में बतौर टीचर सेवा करते रहे। अपने क्षेत्र में उच्च शिक्षा और मास्टर्ज़ के लिए अमरीका गए। फिर वापस आकर देश तथा क़ौम की सेवा की। गेम्बिया की एक मशहूर संस्था मैनेजमैंट डवलैप्मन्ट इंस्टीटियूट के संस्थापकों में से थे और यह संस्था गेम्बिया में सिविल सेवक (civil servants) और अन्य लोगों को उच्च शिक्षा देता है। गेम्बिया के बहुत से आला सरकारी अफ़सर इस संस्था से शिक्षा पाए हैं। महोदय ताहिर अहमदिया मुस्लिम सीनियर स्कूल के प्रिंसिपल और नुसरत सीनियर सैकण्डरी स्कूल के हेड मास्टर भी रहे। बहुत से स्थानीय और विदेशी लोगों को शिक्षा दी। प्राय इल्मी क्षेत्रों में आपको बड़ा जाना जाता था और लोग आपको My Teacher कहा करते थे। उनके पीछे रहने वालों में उन की दो पत्नियां और सात बेटे और दो बेटियां हैं। उनकी एक बेगम मिसिज़ अकीबा साहिबा लजना इमाउल्लाह गेम्बिया की सदर हैं और उनके एक बेटे वाकिफे ज़िन्दगी हैं और जामेअतुल मुबश्शेरीन से फ़ारिग़ हैं। इसी तरह एक बेटा उनका ख़ुद्दामुल अहमिदया में भी सदर ख़ुद्दामुल अहमिदया रह चुका है। अमरीका में दो बेटे हैं और एक बेटी यहां यूके में रहती हैं। अल्लाह तआला मरहूम से रहम और क्षमा का सुलूक फ़रमाए और उनके बच्चों को भी हमेशा उनकी इच्छाओं के अनुसार धर्म से जुड़ कर रखे।

अमीर साहिब गेम्बिया लिखते हैं कि विनीत भी क़राब आईलैण्ड मिडल स्कूल (Crab Island Middle School) मैं उनका शिष्य रहा है। यहां समस्त अहमदी छात्रों ने अन्य मुसलमान छात्रों के साथ मिलकर जुम्मेरात के दिन इस्लामीयात की एक कक्षा जारी की थी और मरहूम यह कक्षा लिया करते थे। महोदय जमाअत के उहदेदारों और निज़ामे जमाअत का बहुत सम्मान करते थे। कहते हैं कि मेरे उस्ताद थे लेकिन इसके बावजूद बतौर अमीर हमेशा मेरी और अन्य ओहदेदारों की पूर्ण इताअत की। बहुत मुख़लिस, मेहनती और खुले दिल के मालिक थे। ख़िलाफ़त के वफ़ादार और आज्ञापालन करते थे। समय के ख़लीफ़ा से इशक़ और मुहब्बत का सम्बन्ध था। हमेशा जमाअत और ख़िलाफ़त की रक्षा में सबसे आगे रहते। अच्छा दीनी इल्म भी रखते थे। तर्कों से बात किया करते थे, हिक्मत से बात किया करते थे और नवीन टैक्नोलोजी और विभिन्न माध्यमों से भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम पहुंचाने की कोशिश करते थे। तब्लीग़ में लगे रहते थे।

दूसरा जनाज़ा जो है वह आदरणीय नईम अहमद ख़ान साहिब इब्न अब्दुल जलील ख़ान साहिब नायब अमीर कराची का है। उनको वफ़ात पाए तो दो तीन महीने हो गए। अप्रैल के आख़िर में उनकी वफ़ात हुई थी। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

उनके ख़ानदान में सबसे पहले आदरणीय अख़तर अली साहिब के माध्यम से अहमदियत आई थी जिन्होंने हज़रत मौलवी हसन अली साहिब रज़ि भागलपुरी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे उनके माध्यम से बैअत की थी। मौलवी अख़तर अली साहिब उनकी माता के मामूं और पिता के फूफा थे। नईम ख़ान साहिब ने मैट्रिक पटना, बिहार इंडिया से किया और पाकिस्तान बनने के बाद 1948 ई में लाहौर आ गए। दयाल सिंह कॉलेज से इंटर किया और टी आई कॉलेज लाहौर से ऐम एस सी किया। बाद में लंदन चले गए। फिर 1959 ई में कराची वापस आकर गैस कंपनी (Gas Company) मैं नौकरी कर ली और 1993 ई में यहां से सीनियर जनरल मैनेजर के ओहदे से रिटायर्ड हुए।

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमिदया कराची में बतौर नायब नाज़िम सनअत तिजारत ख़िदमतों का आरम्भ किया। इसके बाद नायब क़ाइद मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया मुक़ामी कराची निर्धारित हुए। फिर1966 ई में मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमिदया कराची के क़ायद चुने गए। चार साल तक यह सेवा की। फिर अन्सारुल्लाह मार्टिन रोड कराची के ज़ईम आला रहे। फिर नाज़िम अन्सारुल्लाह ज़िला कराची भी रहे और1997 ई तक इस सेवा पर फ़ायज़ रहे। नाज़िम अन्सारुल्लाह इलाक़ा कराची निर्धारित हुए। 1997 ई में सेक्रेटरी वक़्फ़ जदीद जमाअत कराची निर्धारित हुए और 2019 ई तक इस ओहदे पर फ़ाइज़ रहे। लंबा अरसा नायब अमीर जमाअत

कराची ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। फ़ज़ले उम्र फ़ाउंडेशन के डायरेक्टर भी रहे। इंटरनेशनल एसोसीएशन आफ़ अहमदिया आर्कीटेक्टस ऐंड इंजनीयरज़ की पहली मज्लिस आमला में बतौर आडीटर सेवा कीं। कई साल तक उसके कराची चैप्टर (chapter) के सदर भी रहे। 1970 ई में दारुल ज़ियाफ़त रब्वाह के लिए बल्कि जलसा सालाना के लिए रोटी पकाने की मशीनें लगाने का मन्सूबा बनाया गया और मशीनें बनानी शुरू की गईं तो आपको बतौर इंजनीयर इस काम में हिस्सा लेने का सम्मान प्राप्त हुआ।

नईम ख़ान साहिब की पत्नी की वफ़ात काफ़ी अरसा पहले हो गई थी। आपकी बेटी अम्मारा साहिबा कहती हैं कि हमारे पिता ने हमारी अम्मी जान की वफ़ात के बाद न केवल एक शफ़ीक़ बाप बल्कि ख़्याल रखने वाली माँ और एक हमदर्द दोस्त का भी रोल बहुत उत्तम तरीका से निभाया। हर वक़त धर्म, ख़िलाफ़त से वफ़ादारी, नमाज़ की पाबंदी और जमाअत से सम्बन्ध की शिक्षा दी। उनके दामाद डाक्टर ग़फ़्फ़ार साहिब कहते हैं कि मेरी उनसे रिश्तेदारी तीस साल पहले हुई थी। इन तीस सालों में मुझे मरहूम को इंतिहाई क़रीब से देखने का अवसर मिला। उनकी क़ुरबत और सोहबत ने मेरी ज़िन्दगी में इंतिहाई सकारात्मक अंदाज़ में प्रभाव डाला। मरहूम का मामूल इंतिहाई पाकीज़ा और सादगी से भरा हुआ था। इबादत से शग़फ़ रशक योग्य सीमा तक था। तहज्जुद उनकी आदत था। आख़िरी दिनों में जबकि फ़ालिज के हमले के कारण से अपने तौर पर चल फिर नहीं सकते थे उस वक़्त भी अपनी दिनचर्या में ज़र्रा बराबर अन्तर नहीं आने दिया और अपने मेल नर्स को कहा कि मुझे अमुक वक़्त उठा के बिठा दिया करो और फिर कुर्सी पर बैठ के बाक़ायदा तहज्जुद से आग़ाज़ करते थे। नमाज़ें पढ़ते थे और बावजूद माज़ूरी के लेपटॉप पर धर्म के काम भी करते थे।

मुरब्बी सिल्सिला नसीम तबस्सुम साहिब कहते हैं कि हर समय उनके होंटों पर मुस्कुराहट रहती थी और बावजूद बीमार होने के दफ़्तर ज़रूर आते थे। वाक़फ़ीन ज़िन्दगी के साथ भी बहुत प्यार करते और बड़े सम्मान से पेश आते थे।

अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनकी औलाद को उनकी नेकियों को जारी रखने का सामर्थ्य प्रदान फ़रमाए। उनके बारे में यहां एक और बात भी है। ज़रतुशत मुनीर साहिब नार्वे से लिखते हैं कि आप ख़िदमते दीन के लिए हर समय तैयार रहते थे। ख़िलाफ़त से मुहब्बत इख़लास और वफ़ा का सम्बन्ध हमेशा क़ायम रखा। कहते हैं जब मैं क़ाइद ज़िला की हैसियत से ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहा था तो बड़ी आला रंग में मेरी रहनुमाई फ़रमाया करते थे और हमेशा उनमें मैं ने देखा कि हर अमीर के साथ उन्होंने इताअत और सहयोग का बेहतरीन मेयार रखा।

अगला जनाज़ा आदरणीया बुशरा बेगम साहिबा पत्नी ठेकेदार वली मुहम्मद साहिब मरहूम जर्मनी का है जो 19 जुलाई को 74 साल की उम्र में हार्ट अटैक के कारण से जर्मनी में वफ़ात पा गई थीं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

उनके दादा हज़रत मियां निज़ामुद्दीन साहिब आफ़ नाभा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। तहज्जुद की अदायगी में बड़ी बाक़ायदा थीं। नमाज़ों की पाबंद थीं। मेहमान नवाज़ थीं। ज़रूरतमंदों का ध्यान रखने वाली थीं। माली क़ुर्बानी में आगे रहती थीं। नेक, मुख़लिस औरत थीं। ख़िलाफ़त से बेपनाह मुहब्बत थी और अक़ीदत का सम्बन्ध था। बचपन से नज़र की कमज़ोरी के कारण से बाक़ायदा क़ुरआन करीम नहीं पढ़ सकती थीं लेकिन शादी के बाद अपने बच्चों की मदद से कुछ सिपारे हिफ़्ज़ भी किए। एम टी ए पर क़ुरआन करीम की तिलावत सुनने के इलावा हरवक्त मेरे ख़ुत्बे भी बाक़ायदा सुनती थीं और बाक़ायदा दूसरे प्रोग्राम भी सुनती थीं। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसिया थीं।

उनके पीछे रहने वालों में चार बेटे और दो बेटियां शामिल हैं। एक बेटे शफ़ीक़ुर्रहमान साहिब मुबल्लिग़ सिल्सिला, न्यूज़ीलैंड के मिशनरी इंचार्ज हैं और अतीक़ुर्रहमान साहिब आजकल यहां वक़्फ़ करके हमारे पी एस दफ़्तर के विभाग रिकार्ड में काम कर रहे हैं। शफ़ीक़ुर्रहमान साहिब जो मिशनरी इंचार्ज हैं अपनी माता के जनाज़े में शामिल भी नहीं हो सके थे। तद्फ़ीन उनकी यहां हुई है। अल्लाह तआला उन्हें भी सुकून और सब्र प्रदान करे और अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी औलाद को उनकी दुआओं का वारिस बनाए।

नमाज़ के बाद इंशा अल्लाह इनका जनाज़ा पढ़ाऊंगा।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 25 सितम्बर 2020 पृष्ठ 5 से10)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

ग़लत है और जमाअत अहमदिया को पहले दिन से ही ऐसी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसी मुश्किलों का सामना जमाअत को सबसे अधिक पाकिस्तान में होगा लेकिन दूसरे देशों भी हैं जहां अहमदियों के ख़िलाफ़ भड़काया जाता है जैसे बांग्लादेश इत्यादि। लेकिन जिस बात ने मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया है वह ऐसी बातों पर जमाअत अहमदिया की प्रतिक्रिया है। जमाअत अहमदिया की प्रतिक्रिया अनुकरण योग्य है और यही है कि मुहब्बत सबके लिए और नफ़रत किसी से नहीं। यह एक ऐसा माटो बल्कि उसूल है जिसको केवल धार्मिक मामलों में नहीं बल्कि उसे और अधिक व्यापक पैमाने पर फैलाना और मशहूर करना होगा। हम नैशनल असेम्बली में विभिन्न इलाक़ों का प्रतिनिधित्व करते हैं और हम सबने अपने अपने स्थान पर अवश्य अहमदियों से यही अनुभव प्राप्त किया होगा। यह एक निहायत ही सक्रिय जमाअत है जो आर्थिक रूप से भी बहुत ही लाभदायक हैं।

इसके बाद जनाब Niels Annen साहिब जो Minister of State और Deputy Foreign Minister हैं ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। उन्होंने सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रिहिल अज़ीज़ और अन्य हाज़रीन को सलाम प्रस्तुत किया और आज के प्रोग्राम के बारे में ख़ुशी का इज़्हार किया।

महोदय ने कहा 70 साल पहले जर्मनी का बुनियादी क़ानून तैय्यार हुआ जिसमें एक बुनियादी हक़ धार्मिक आज़ादी का है। इसी कारण से इस देश में विभिन्न धर्मों और कल्चरों के लोग अमन तथा प्यार के साथ इकट्ठे रह रहे हैं। इसी साल जून 1949 ई में जर्मनी के Nordwestdeutsche Rundfunk रेडियो स्टेशन ने शेख़ नसीर अहमद जो जमाअत अहमदिया स्विटज़रलैंड के मुबल्लिग़ थे उनका एक लेक्चर प्रसारित किया। इस बात का वर्णन मैं इसलिए कर रहा हूँ कि यह पहली बार जर्मनी में इस्लाम के बारे में प्रसारण थे। आरम्भ ही से जमाअत अहमदिया और जर्मनी के आईन का एक सम्बन्ध चल रहा है। फिर 1955 ई में जमाअत अहमदिया पहले हिमबर्ग में स्थापित की गई और फिर 1957 ई में जंग के बाद की पहली मस्जिद भी बनाई गई अर्थात फ़ज़ले उम्र मस्जिद जिसके साथ मेरा एक गहरा सम्बन्ध है न केवल इसलिए क्योंकि वह मेरे क्षेत्र में है बल्कि मेरी और वहां की लोकल जमाअत की गहरी दोस्ती भी हुई है।

जनाब Niels Annen साहिब ने कहा कि जमाअत को Hamburg में 2014 ई से और सूबा Hessen में 2013 ई से Krperschaft des ffentlichen Rechts ने उसका स्टेटस ईसाई चर्च के बराबर माना है। यह कोई मामूली चीज़ नहीं है क्योंकि जमाअत अहमदिया जर्मनी के लिए विभिन्न रंग में लाभदायक साबित हो रही है। एक पहलू यह भी है कि वह जर्मनी में ही अपने मुरब्बियों को तैय्यार करती है। इसी लिए हमारा भी फ़र्ज़ बनता है कि हम भी उनकी मदद करें। जर्मनी के देश को अगले सालों में एक-बार फिर यह अधिकार प्राप्त हो रहा है कि हम United Nations के Human Rights Council में शामिल होंगे। कुछ दिन पहले ही इसका चयन पूर्ण हुआ है। जर्मनी को पिछले सालों में इस फ़ील्ड में बहुत सम्मान प्राप्त हुआ है और हमें Human Rights के मामलों में पूछा जाता है। इसलिए मैं अहमदिया मुस्लिम जमाअत के साथ वादा करना चाहता हूँ कि हम लोग अवश्य इस प्लेटफार्म पर धार्मिक आज़ादी के बारे में बात करेंगे और विशेषकर जमाअत अहमदिया के हवाला से भी इस बात का वर्णन करेंगे। अवश्य इससे सारी मुश्किलें हल तो नहीं हो सकेंगी लेकिन हम आप लोगों का साथ ज़रूर देंगे।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

2020-2019 ई में जमाअत अहमदिया पर नाज़िल होने वाले अल्लाह तआला के असंख्य फ़ज़्लों और समर्थनों तथा सहायता के महान निशानों में से कुछ का ईमान बढ़ाने के लिए वर्णन।(भाग....1)

पिछले एक साल के दौरान 98 देशों से 220 क़ौमों से सम्बन्ध रखने वाले 1 लाख 12 हज़ार 179 लोगों का अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम में शामिल होना।

दुनिया के विभिन्न देशों में बसने वाले विभिन्न रंग तथा नस्ल से सम्बन्ध रखने वाले लोगों के अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम स्वीकार करने की ईमान वर्धक घटनाएं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की 16 किताबों के हिन्दी अनुवाद का प्रकाशन, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 20 की 6 किताबें और तफ़्सीर कबीर भाग प्रथम के अरबी अनुवाद की पूर्णता।

अरबिक, रशियन, चीनी, टर्किश, इंडोनेशियन, स्पेनिश तथा अन्य डेस्क के अधीन कई किताबें तथा निबन्धों की तैयारी तथा प्रकाशन, ख़ुतबाते जुम्अः और एम टी ए के प्रोग्रामों के अनुवाद।

सारी दुनिया में इस्लाम के शान्ति प्रिय और वास्तविक पैग़ाम के प्रसारण तथा प्रकाशन के लिए एम टी ए के समस्त चैनल्ज़ की अनुपमीय सेवाओं का वर्णन।

जलसा सालाना यू.के से सम्बन्धित सय्यदना अमीरुल मोमनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रिहिल अज़ीज़ का विशेष ख़िताब।

9 अगस्त 2020 ई अर्थात 9 ज़हूर1399 हिज्री शम्सी स्थान इवाने मसरूर,इस्लामाबाद,टलफ़ोरड (सिरे)यू के

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जैसा कि परसों के ख़ुत्बा में मैंने बताया था कि जलसा सालाना की रिपोर्ट का बाक़ी हिस्सा पेश करूँगा इंशा अल्लाह या यह कह लें कि इस वर्ष अल्लाह तआला के जो फ़ज़्ल जमाअत पर हुए हैं उनका कुछ ज़िक्र करूँगा। बड़ी कोशिश के बावजूद जो रिपोर्ट का सार बनाया गया था वह भी पेश नहीं कर सकूँगा उसे भी संक्षिप्त किया है। बहरहाल आज मैं जहां से शुरू कर रहा हूँ वह यह है। पहले दफ़्तर की रिपोर्ट जो विभिन्न मर्कज़ी दफ़्तर हैं।

वकालत तामीलो तनफ़ीज़ लंदन में है। यह भारत नेपाल और भूटान से सम्बन्धित मामलों की निगरानी करती है और जो भी हिदायतें उनको मेरी तरफ़ से जाती हैं वह उनके द्वारा से फिर वहां पहुंचाई जाती हैं। इसके बहुत सारे काम हैं, संक्षिप्त में वर्णन कर रहा हूँ। इस समय क़ादियान में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की समस्त किताबों के हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण करवाने का काम हो रहा है और उसकी निगरानी यहां से इस वकालत की तरफ़ से होती है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस वर्ष अब तक नाज़िर साहिब नश्रो इशाअत क़ादियान की रिपोर्ट के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की 16 अन्य किताबों के हिन्दी अनुवाद पहली बार प्रकाशित हो चुके हैं जबकि इक्कीस किताबें अभी प्रिंटिंग ,कम्पोज़िंग, प्रफ़ू रीडिंग और रिव्यू (review) के चरणों में हैं। अरबी क़ुरआन करीम जो उनकी तरफ़ से प्रकाशित हुआ था वह पहले मैं इस ख़ुत्बा में वर्णन कर चुका हूँ, उस पर भी क़ादियान की नज़ारत इशाअत ने बड़ा काम किया है।

इसी तरह तब्लीग़ के काम भी वहां हो रहे हैं जिस हद तक इन हालात के अनुसार ऑनलाइन जितना हो सकता है।

अरबी डैसक है। अरबी डैसक के अधीन पिछले साल तक जो किताबें और पमफ़्लेटस अरबी भाषा में तैयार हो कर प्रकाशित हुए हैं उनकी संख्या 145 है। रुहानी ख़ज़ाइन भाग 20 जिसमें 6 किताबें शामिल हैं वह इस साल प्रिंटिंग के लिए भिजवा दी गई है। तफ़सीर कबीर भाग प्रथम भिजवा दी गई है। इस के इलावा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बहुत सी किताबों पर अनुवाद का काम हो रहा है। इसी तरह खलीफ़ा के ख़ुत्बों और तहरीरों के अनुवाद का काम हो रहा है। कुछ सम्पूर्ण कर के प्रैस को भिजवा भी दिया गया है। इंशा अल्लाह वह भी शीघ्र आ जाएगा। जमाअत की मर्कज़ी वेबसाइट पर अलहमदु लिल्लाह अब तक छपने वाली सब अरबी किताबें और मेरे ख़ुत्बाते जुम्अः और ख़िताबों का अनुवाद और बहुत से निबन्धों और सैंकड़ों सवालों और एतराज़ों के विस्तार से उत्तर दिए गए हैं। उन्हें भी अपडेट किया जाता है। हवारुल मुबाशिर, लिक़ा माअल अरब, मिनहाजुत्तालेबीन, मजालिस ज़िक्र, इर्फ़ान इलाही और सैरुल हुदा पर प्रोग्राम की वीडियोज़ भी इस में मौजूद हैं और ख़ुत्बा तो इस वेबसाइट पर 2008 ई से नियमित डाला जा रहा है। इसी तरह पत्रिका अत्तकवा भी वेबसाइट पर उपलब्ध है।

फिर फ्रैंच डैसक है और इस में भी एम टी ए पर प्रसारित होने वाले ख़ुत्बों और विभिन्न प्रोग्रामों का फ्रैंच अनुवाद जमाअत के लिट्रेचर और अनुवाद उनके सपुर्द कामों में है। फिर इसी तरह फ्रैंच देशों से ख़त तथा पत्र जो होते हैं वे भी उनके कामों में शामिल है। सोशल मीडिया और फ्रैंच वेबसाइट और फ्रैंच वैब टीवी के द्वारा अहमदियत और वास्तविक इस्लाम की प्रकाशन का काम उनके सपुर्द है। फ्रैंच वेबसाइट का नवम्बर 2009 ई में आरम्भ हुआ था और अब तक 1.65 मिलियन से अधिक दर्शकों ने वेबसाइट को देखा है। लोगों के सवालों का जवाब ई मेल के द्वारा दिया जाता रहा है और इसी तरह ख़ुत्बा जुम्अः की आडियो वीडीयो रिकार्डिंग का नियमित अनुवाद अपलोड किया गया है। इस में जमाअत के ख़बरें भी अपलोड की जाती हैं और इस के इलावा बहुत सारे काम जो जमाअत के लिट्रेचर से सम्बन्धित यह कर रहे हैं वह उनके ज़िम्मे हैं।

फिर टर्किश डैसक है। यहां भी इस वर्ष लगभग अठारह , उन्नीस किताबों के अनुवाद पर निरीक्षण करके उनको प्रकाशन के लिए तैयार किया गया है और अब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से शीघ्र ही आ जाएँगी। एम टी ए पर प्रसारित करने के लिए तुर्की भाषा में इस वर्ष 43 प्रोग्राम रिकार्ड करवाए गए हैं। त्रैसामिक तुर्की पत्रिका "मअनवयात" जर्मनी से नियमित प्रकाशित किया जाता है। जर्मनी में रहने वाले मुबल्लिग़ीन से हर हफ़्ता सवाल तथा जवाब या किसी विषय पर विचारों पर आधारित टर्किश प्रोग्राम रिकार्ड किया जाता है जो बाद में इंटरनैट पर पेश किया जाता है। बच्चों की तर्बीयत के लिए इंटरनैट पर सवाल तथा जवाब का धार्मिक प्रोग्राम पेश किया जाता है जिसमें तुर्की अहमदी बच्चे और बच्चियां भाग लेते हैं।

फिर रशियन डैसक है इस में भी समस्त ख़ुत्बों जुम्अः और अन्य ख़िताबों का अनुवाद करने का काम उनके सपुर्द है और बड़े उत्तम तरीक़ा पर यह अनुवाद कर रहे हैं। इसी तरह उन अनुवाद करने वालों में हमारे पाकिस्तानी मुबल्लिग़ीन जिन्होंने भाषा सीखी इनके इलावा वहां रशियन लोगों में से अमील साहिब और दामेर सफ़ीउल्लाह साहिब शामिल हैं और उनके अनुवाद की चैकिंग रुस्तम हम्माद वली साहिब करते हैं, हमारे मुअल्लिम हैं। ख़ुत्बा जुम्अः हफ़्ते में दो दिन सोमवार और जुम्मेरात को एम टी ए पर रशियन अनुवाद के साथ प्रसारित होता है इसके इलावा यू ट्यूब और आर यू टयूब (RUTUBE) पर भी प्रसारित किया जाता है। इस वर्ष सिर्फ यूट्यूब के द्वारा से 57 हज़ार लोगों ने ख़ुत्बा जुम्अः सुना।

रशियन ,उज़बेक ,काज़िक, किरगिज़ ,ताजिक भाषा में प्राप्त होने वाले पत्रों के भी जवाब ये देते हैं। रशियन अनुवाद क़ुरआन करीम के चौथे संस्करण का निरीक्षण

और प्रफ़ू रीडिंग का काम जारी है। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मल्फ़ूज़ात की दस जिल्दों का अनुवाद सम्पूर्ण हो चुका है, निरीक्षण और प्रफ़ू रीडिंग का काम जारी है। रशियन वेबसाइट है। 2013 ई में रशियन भाषा में जमाअत की वेबसाइट का आरम्भ हुआ था और समस्त जुम्अ: के ख़ुत्बों और अन्य ख़िताबों का रशियन अनुवाद नियमित अपलोड किया जाता है इसी तरह जो किताबें रशियन अनुवाद में प्रकाशित होती हैं वे भी साथ साथ अपलोड की जाती हैं। इस वर्ष दस हज़ार से अधिक लोगों ने इस वेबसाइट पर विज़ट किया। फेसबुक और इंस्टाग्राम पर भी 1.5 मिलियन से अधिक लोगों ने विज़ट किया। उज़बेक वेबसाइट है इस में भी ख़ुत्बे और ख़िताब अपलोड किए गए और कुछ दूसरे ऐडरेसिज़ (addresses) मेरे या इसके इलावा जो जमाअत के प्रोग्राम थे। किरगिज़ भाषा में जमाअत की वेबसाइट है इस वेबसाइट के द्वारा किर्गीज़स्तान और दुनिया के विभिन्न देशों में फैली हुई किर्गीज़ क़ौम के लिए इस्लाम और अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाया जा रहा है। इस वर्ष 2 लाख 29 हज़ार से अधिक लोगों ने वेबसाइट को विज़ट किया। कुछ सामग्री जो इस वेबसाइट पर उपलब्ध की गई इस में क़ुरआन करीम के तीस पारों की तिलावत वीडियो के साथ भी अपलोड की गई है और इस के इलावा और बहुत सारा लिट्रेचर है।

बंग्ला डैसक है। एम टी ए पर चालीस घंटे के बंग्ला लाईव प्रोग्राम पेश किए गए। उनके द्वारा से, उन प्रोग्रामों के नतीजे में बांग्लादेश और पश्चिमी बंगाल में 69 बैअतें प्राप्त हुईं। क़ुरआन करीम के बंग्ला अनुवाद के निरीक्षण का काम जारी है। इस वक़्त पच्चीसवें पारे का निरीक्षण हो रहा है और इसके इलावा और बहुत सारा काम है जो बंग्ला डैसक कर रहा है।

चीनी डैसक है। चीनी डैसक ने इस साल Life of Muhammad और Ten Proofs for the Existence of God किताबें जो हैं उनका अनुवाद सम्पूर्ण किया है और इस के इलावा विभिन्न किताबें हैं जिनमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुछ किताबें हैं और दूसरा लिट्रेचर भी शामिल है वे भी लगभग तैयार है और प्रकाशन के लिए भिजवा दिया जाएगा।

इंडोनेशियन डैसक है। इंडोनेशियन भाषा में भी अब ख़ुत्बा जुम्अ: का लाईव अनुवाद किया जाता है जब से यहां डैसक खोला है। इसके इलावा इस वर्ष 220 प्रोग्रामों का अनुवाद हुआ। इस वर्ष हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें और दूसरे लिट्रेचर का अनुवाद किया गया। इत्मामुल हुज्जा, सिराजे मुनीर, मल्फ़ूज़ात भाग 2, सच्चाई का इज़हार और बहुत सारा लिट्रेचर।

स्वाहेली डैसक है। इसका भी यहां यू के में नियमित स्थापना हो चुकी है। एम टी ए अफ़्रीक़ा पर प्रसारित होने वाले समस्त प्रोग्रामों का स्वाहेली भाषा में अनुवाद किया जा रहा है। एम टी ए अफ़्रीक़ा के लिए क़ुरआन करीम का स्वाहेली अनुवाद रिकार्ड करवाया जा रहा है। इस वर्ष पंद्रह पारों का अनुवाद सम्पूर्ण हुआ। इसके इलावा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों के अनुवाद का काम भी हो रहा है।

स्पेनिश डैसक है। मर्कज़ी स्पेनिश डैसक की स्थापना जब से हुई है यह स्पेन में ही क़ायम है और वहीं से सीधा मर्कज़ की निगरानी में यह काम कर रहा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुछ किताबों के अनुवाद का काम उन्होंने सम्पूर्ण किया है और इंशा अल्लाह शीघ्र प्रकाशन के लिए भिजवा दी जाएँगी। इसके इलावा और बहुत सारे काम उन्होंने किए हैं और बड़ा अच्छा काम कर रहे हैं। स्पेनिश वेबसाइट और सोशल मीडिया को मासिक बाईस हज़ार लोग आजकल विज़ट करते हैं और रमज़ान के महीना में यह संख्या 42 हज़ार थी। इसके इलावा फेसबुक पर कई आर्टीकल लिखे गए जिनके द्वारा हज़ारों स्पेनिश लोगों तक पैग़ाम पहुंचा। विभिन्न विषयों पर संक्षिप्त वीडीयोज़ बना कर भी वेबसाइट पर डाली गईं इसके द्वारा समपर्क भी हो रहे हैं। ब्राज़ील से एक दोस्त ने वेबसाइट के द्वारा सम्पर्क किया और बाद में बैअत की। इसी तरह अर्जनटाइन की एक जर्नलिस्ट से भी सम्पर्क हुआ जिसने बाद में अख़बार में जमाअत के हवाले से बड़ा अच्छा निबन्ध लिखा।

तहरीक वक़्फ़े नौ इसका दफ़्तर भी अब काफ़ी आर्गेनाईज़ हो चुका है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दुनिया-भर में वाक़फ़ीन नौ की कुल संख्या 72 हज़ार 932 है। जिसमें 43 हज़ार 281 लड़के और 27 हज़ार 994 लड़कियां हैं। इस साल नए वाकफ़ीन जो शामिल हुए वे 3 हज़ार 994 हैं। पंद्रह साल से अधिक उम्र के वाकफ़ीन नौ की संख्या 32 हज़ार 319 है। जिसमें लड़के 20 हज़ार 920 और लड़कियां 11 हज़ार 399 इस रिपोर्ट के अनुसार तजदीद वक़्फ़ नौ करने वाले, जिन वाकफ़ीन नौ के फ़ार्म प्राप्त हुए उनकी कुल संख्या 15 हज़ार से अधिक है। जो बड़े देश हैं जहां वाकफ़ीन नौ हैं उनमें पाकिस्तान है जहां 34 हज़ार से अधिक हैं, जर्मनी है यहां 9 हज़ार से अधिक, यूके है 6 हज़ार से अधिक, इंडिया है 4 हज़ार से अधिक, कैनेडा है 4 हज़ार से अधिक। इसके इलावा हर देश में हैं। यह बड़ी संख्या मैंने दे दी।

अल-इस्लाम वेबसाइट: इस वक़्त 310 किताबें अंग्रेज़ी में और एक हज़ार उर्दू भाषा की किताबें वेबसाइट पर डाली जा चुकी हैं। इस वर्ष बारह नई अंग्रेज़ी किताबें एप्पल (Apple) गूगल (Google) और एमेज़ोन (Amazon) पर प्रकाशित की गईं। इस तरह उन प्लेटफ़ार्मज़ पर मौजूद किताबें की संख्या 66 हो चुकी है। बहरहाल काफ़ी सामग्री है जो "अल-इस्लाम" पर डाली गई है और उनकी टीम बड़ा अच्छा काम कर रही है। प्राय तो वालंटेयरज़ ही हैं और कोई न कोई नया प्रोग्राम समय समय पर ये परिचित करवाते रहते हैं।

रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ : हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस पत्रिका का आरम्भ फ़रमाया था और पहली संख्या जनवरी 1902 ई में प्रकाशित हुई थी। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस पत्रिका को अब 118 साल हो चुके हैं। यह पत्रिका अंग्रेज़ी, फ्रैंच , स्पेनिश और जर्मन भाषा में प्रकाशित हो रहा है और हर एक भाषा में रिव्यू की वेबसाइट और सोशल मीडिया चैनल्ज़ भी हैं। अंग्रेज़ी पत्रिका मासिक बुनियाद पर प्रकाशित होती है जबकि बाक़ी भाषाओं में पत्रिका का त्रैमासिक प्रकाशन होता है और इस के इलावा हर सप्ताह ऑनलाइन सामग्री भी प्रकाशित हो रही है। रिव्यू आफ़ रिलीजिंज़ ने अंग्रेज़ी भाषा बोलने वाले वर्ग तक हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम पहुंचाने में बड़ी प्रमुख भूमिका अदा की है। इसी तरह जर्मन और स्पेनिश लोगों में भी अब यह पैग़ाम पहुंच रहा है।

सोशल मीडिया के द्वारा रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ बड़ा काम कर रहा है जिसमें टविटर (Twitter) फेसबुक (Facebook) इंस्टा ग्राम(Instagram) शामिल हैं। पिछले साल 5 मिलियन से अधिक लोगों ने हमारी सामग्री से लाभ प्राप्त किया। सोशल मीडिया के बारे में इस साल नई स्कीम के अधीन हर-रोज़ या हर दूसरे रोज़ निबन्ध प्रकाशित हो रहे हैं। अब यह भी एक दिलचस्प बात है कि लॉक डाउन के दौरान, इस बीमारी के लॉक डाउन के दौरान लोगों का ऑनलाइन निबन्ध पढ़ने की तरफ़ पहले से ज़्यादा रुझान पैदा हुआ है और इस में 120 निबन्ध ऑनलाइन प्रकाशित किए गए।

रिव्यू आफ़ रिलीजिंज़ का एक यूट्यूब चैनल है इस को सत्तर हज़ार लोगों ने सबस्क्राइब (subscribe) किया है। सिर्फ पिछले साल में ही हमारी वीडियो को 1.7 मिलियन बार देखा गया।

अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल है। इसका आरम्भ 1994 ई में साप्ताहिक की शक्ल में हुआ था और अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से 27 मई 2019 ई से सप्ताह में दो रोज़ जुम्अ: और मंगल को प्रकाशित हो रहा है और बड़ा अच्छा, ख़ूबसूरत रंगीन संख्या की सूरत में प्रकाशित हो रहा है।

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सेक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

अलहकम अंग्रेज़ी का है। नियमित यह साप्ताहिक अख़बार प्रकाशित हो रहा है। यह भी कहते हैं कि कोरोना वाइरस के कारण लॉक डाउन के ज़माने में अलहकम की रीडरशिप में ग़ैरमामूली वृद्धि हुई है।

अख़बारों में जमाअत की ख़बरों और निबन्धों का प्रकाशन की रिपोर्ट यह है कि जो दुनिया के विभिन्न दूसरे अख़बार हैं उनमें जमाअत की ख़बरें और आर्टीकल प्रकाशित होते रहे। अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ल से स्वीकारियता की जो विशेष हवा चलाई है बड़ी संख्या में मीडिया की जमाअत की तरफ़ ध्यान हुआ है। सामूहिक तौर पर 2 हज़ार 544 अख़बारों ने 12 हज़ार 453 जमाअत के निबन्ध, आर्टीकलज़ और ख़बरें इत्यादि प्रकाशित कीं। इन अख़बारों के पाठकों की कुल संख्या 52 करोड़ से अधिक है।

प्रैस और मीडिया ऑफ़िस है। इस वर्ष अल्लाह तआला के फ़ज़ल से प्रैस ऐंड मीडिया की टीम को कई प्रोजेक्टों पर काम करने की तौफ़ीक़ मिली जिससे बड़ी संख्या तक जमाअत का पैग़ाम पहुंचा। विभिन्न विषयों पर पोस्ट्स शेयर की गईं जिनके द्वारा 31 लाख से अधिक लोगों तक पैग़ाम पहुंचा। प्रेस ऐंड मीडिया ऑफ़िस ने विभिन्न जर्नलिस्ट्स (journalists) को मस्जिदों में आने की दावत दी और इस वर्ष कुछ मशहूर जर्नलिस्ट्स समेत लगभग 100 जर्नलिस्ट ने मस्जिदों का विज़ट किया

प्रेस ऐंड मीडिया विभाग भारत की तरफ़ से कोरोना वाइरस के हवाले से एक संक्षिप्त निबन्ध प्रकाशित करवाया गया और व्यापक स्तर पर मीडिया के लोगों में इसका प्रचार करवाया गया। इस पर विश्लेशष करते हुए वहां के कौशल साहिब ऐडवोकेट हैं उन्होंने लिखा कि इस निबन्ध को पढ़ने के बाद कोई भी यह कह नहीं सकता कि निज़ामुद्दीन में जो घटना हुई है (वहां जो एक जगह पर तब्लीग़ी जमाअत की घटना हुई थी और इस पर इंडिया में बड़ा शोर पड़ा था इसका इस्लाम के साथ या अहमदिया जमाअत के साथ कोई सम्बन्ध है। यह असल में लोगों की लापरवाही है और सोच की ग़लती है। इस्लाम तो शुरू से ही छूआ-छूत बीमारी से बचने के बारे में आगाह करता रहा है। और फिर कहते हैं कि आपका निबन्ध बहुत उत्तम है और ठीक समय की तुलना से आपने दिया है और आशा की कि इसके नेक परिणाम प्रकट हों।

मख़ज़ने तसावीर विभाग है। ताहिर हाऊस में इसका दफ़्तर है और एगज़ीबीशन (exhibition) है। जिस तरह विज़िट होने चाहिऐं वहां मेरी रिपोर्ट के अनुसार वैसे अभी तक विज़िट हो नहीं रहे। अधिक से अधिक देखा जाना चाहिए। आजकल तो ख़ैर हालात ऐसे हैं लेकिन आम हालात में भी विज़िट होने चाहिऐं लोगों को जमाअत की तारीख़ का पता लगता है। इस वर्ष अब तक लगभग 25 देशों से 913 से अधिक लोगों ने नुमाइश का विज़िट किया और यह तो बहुत मामूली संख्या है। और उनकी तस्वीरी नुमाइश को नियमित अपडेट किया जाता है।

अहमदिया आरकाईज़ ऐंड रिसर्च सैंटर है। इस विभाग के अधीन हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुलफ़ाए अहमदियत के तबर्रुकात को सुरक्षित करने का काम जारी है। और पश्चिमी मुहक़्क़िक़ीन जो जमाअत अहमदिया पर रिसर्च कर रहे हैं उनके साथ समपर्क में हैं और उन्हें हक़ायक़ पर आधारित मालूमात दी जाती हैं। इसी तरह जमाअत के तारीख़ी रिकार्ड में से सम्बन्धित सामग्री की तरफ़ से उनकी रहनुमाई की जाती है और अच्छा काम कर रहे हैं, काफ़ी रिकार्ड उन्होंने इकट्ठा किया है।

एम टी ए अफ़्रीक़ा अगस्त 2016 ई में एम टी ए अफ़्रीक़ा का आरम्भ हुआ था और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से काफ़ी वुसअत धारण करता चला जा रहा है और उसके द्वारा से दूर दराज़ इलाक़ों की स्थानीय भाषाओं में पैग़ाम पहुंच रहा है। इस समय एम टी ए अफ़्रीक़ा के दो चैनल्ज़ विभिन्न भाषाओं में एक साथ प्रसारण प्रस्तुत कर रहे हैं। इस वर्ष विभिन्न स्टूडीयो में यूरोबा , हाओसा , चोई, स्वाहेली , फ़्रैंच और करेवल भाषाओं में छः सौ से अधिक प्रोग्राम तैयार किए गए। घाना से, वहां भी बड़ा अच्छा स्टूडियो बनाया गया है जिसका नाम "आदम" स्टूडियो है, काफ़ी लाईव प्रोग्राम प्रसारित हुए और अफ़्रीक़ा में पहली बार क़ुरआन करीम की तिलावत का मुक़ाबला भी वहाब आदम स्टूडियो से हुआ।

गेम्बिया में टीवी चैनल और स्टूडियो की पूर्णता हुई। इस वर्ष एम टी ए अफ़्रीक़ा ने गेम्बिया में एक स्टूडियो का काम सम्पूर्ण किया है जहां से एक चैनल के द्वारा चौबीस घंटे प्रसारण पेश किए जा सकेंगे और कई स्यासी और इल्मी शख़्सियात अब गेम्बिया में एम टी ए को विशेष रूप से देखती हैं।

मुबल्लिग़ इंचार्ज कैमरून लिखते हैं कि ख़ुदा के फ़ज़ल से कैमरोन के130 छोटे बड़े शहरों में एम टी ए अफ़्रीक़ा केबल सिस्टम के द्वारा देखा जाता है। इसी तरह एम टी ए अलअरबी भी पश्चिम के तीन क्षेत्रों में देखा जाता है और एम टी ए के द्वारा से कैमरून के दस मिलियन से अधिक लोगों तक अहमदियत का पैग़ाम पहुंच रहा है। कैमरून में एम टी ए अंग्रेज़ी और फ़्रैंच दोनों भाषाओं में देखा जाता है। नॉर्थ के तीनों क्षेत्रों में मुसलमानों की अधिकता है इसलिए उल्मा एम टी ए अल-अरबी बड़े शौक़ से सुनते हैं और लोगों में एक बेदारी पैदा हो रही है।

अमीर साहिब तन्ज़ानिया लिखते हैं कि दिसम्बर 2019 ई में मोशी (Moshi) क्षेत्रों के हमारे दो मुअल्लेमीन तब्लीग़ी मुहिम के लिए शहर से लगभग सत्तर किलो मीटर की दूरी पर स्थित एक गांव में गए और मुअल्लेमीन घर-घर जा कर तब्लीग़ करने लगे। एक हज्जाम की दुकान पर उन्होंने देखा कि टीवी पर एम टी ए अफ़्रीक़ा कै प्रसारण जारी हैं। उन्होंने दुकान के मालिक से पूछा क्या आप अहमदी हैं? उसने जवाब दिया कि मैं अहमदी तो नहीं हूँ परन्तु यह व्यक्ति जिसने पगड़ी पहनी हुई है इसका ख़ुत्बा आता है और दूसरे प्रोग्राम जो एम टी ए पर आते हैं बड़े अच्छे रुहानी होते हैं, इल्मी होते हैं उनको मैं नियमित सुनता हूँ इसलिए मुझे यह इस्लामी चैनल पसन्द है। बहरहाल इसके बाद उनके घर जाकर मुअल्लेमीन ने इस्लाम और अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाया। इन अहमदियों को भी याद रखना चाहिए जो एम टी ए पर पूरी तरह ध्यान नहीं देते और शायद हफ़्ता में एक दिन ही उनके हाँ एम टी ए सुना जाता है कि अगर वो सुनें तो उनकी भी एम टी ए के द्वारा काफ़ी हद तक इल्मी और रुहानी प्यास बुझ सकती है और घरों में तर्बीयत का भी बेहतर माहौल पैदा होता है ।

आजकल कोरोना की वजह से जो विभिन्न रिपोर्टें हैं उनमें तो ये ज़िक्र किया जा रहा है कि एम टी ए सुनने की तरफ़ रुझान पैदा हुआ और हम इकट्ठे बैठ के सुनते हैं चाहे थोड़ा समय सुनें लेकिन जब हालात बेहतर हो जाऐंगे तब भी इस तरफ़ ध्यान देने की ज़रूरत है

बुरकीना फासो के क्षेत्रों दिदगूओ की एक जमाअत है वहां के मुअल्लिम वहां की जमाअत के लोगों के इख़लास और वफ़ा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि हमारी जमाअत में पहली बार एम टी ए लगा और लोगों ने पहली बार समय के ख़लीफ़ा को देखा तो उनकी आँखें नम थीं और उनके चेहरों से खुशी प्रकट हो रही थीं।

अहमदिया रेडियो स्टेशन हैं। इस वर्ष 2 नए रेडियो स्टेशनो की वृद्धि के साथ इस वक़्त जमाअत के अपने रेडियो स्टेशनों की संख्या 27 हो चुकी है जिनमें माली में 17 रेडियो स्टेशन हैं, बुरकीना फासो में है ,सैरालियून में और तंज़ानिया में और गेम्बिया में। और यहां (यूके में वाइस आफ़ इस्लाम भी काम कर रहा है, बड़ा अच्छा काम कर रहा है।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर (उत्तर प्रदेश)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 8 October 2020 Issue No.41

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

मल्फ़ूज़ात पृष्ठ 1 का शेष

का सिल्सिला होगा और इसी लिए हदीसों में मसीह मौऊद का नाम ख़ुदा तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की द्वारा "कासेरुस्सलीब" (सलीब को तोड़ने वाला) रखा है। क्योंकि यह सच्ची बात है कि हर एक मुजद्दिद अपने समय में पाए जाने वाले फित्नों के सुधार के लिए आता है। अब इस वक़्त ख़ुदा के लिए सोचो, तो क्या मालूम न होगा कि सलीबी निजात के समर्थन में क़लम और ज़ुबान से वह काम लिया गया है कि अगर सारे संसार को टटोला जाए तो झूठ की उपासना के समर्थन में यह सरगर्मी दूसरे ज़माना में साबित न होगी और जब कि सलीबी फ़ित्ना के समर्थकों की तहरीरें अपने चरम बिन्दु पर पहुंच चुकी हैं और तौहीद हक़ीक़ी और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्रता, इज़्ज़त और सत्यता और अल्लाह की किताब के अल्लाह की तरफ से होने पर ज़ुल्म और ज़ोर के मार्ग से हमले किए गए हैं, तो क्या अल्लाह तआला की ग़ैरत का तक़ाज़ा नहीं होना चाहिए कि उस "कासेरुस्सलीब" को इस समय नाज़िल करे? क्या ख़ुदा तआला अपने वादा اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (अल्हिज्र:10) को भूल गया? निसन्देह याद रखो कि ख़ुदा के वादे सच्चे हैं। उसने अपने वादा के अनुसार दुनिया में एक नज़ीर (सचेत करने वाला) भेजा है। दुनिया ने इस को स्वीकार न किया, परन्तु ख़ुदा तआला उसको ज़रूर स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरदार हमलों से उसकी सच्चाई को प्रकट करेगा। मैं तुम्हें सच सच कहता हूँ कि मैं ख़ुदा तआला के वादा के अनुसार मसीह मौऊद हो कर आया हूँ। चाहो तो स्वीकार करो चाहो तो रद्द करो।

परन्तु तुम्हारे रद्द करने से कुछ न होगा। ख़ुदा तआला ने जो इरादा फ़रमाया है वह होकर रहेगा, क्योंकि ख़ुदा तआला ने पहले से बराहीन में फ़र्माया है।صَدَقَ اللّٰہُ وَرَسُوۡلُہٗ وَکَانَ وَعۡدًا مَّفۡعُوۡلًا

21 जनवरी 1898 ई

इस्तिग़फ़ार अल्लाह के अज़ाब और कठोर मुसीबतों के लिए ढाल का काम देता है।

एक स्वंय ताऊन की बीमारी बड़ा अज़ाब है। दूसरा क़ानून इस पर सख़्त है। जो दूसरा अज़ाब है और बीमारी से भी बढ़ कर है। औरत हो या बच्चा हो अलग किया जाता है और घर को ख़ाली करने का हुक्म दिया जाता है। इस बीमारी और इसके क़ानून पर ग़ौर करके मेरे दिल में एक दर्द पैदा हुआ और मैं ने तहज्जुद में इसके बारे में दुआ की तो इल्हाम हुआ اِنَّ اللّٰہَ لَا یُغَیِّرُ مَا بِقَوۡمٍ حَتّٰی یُغَیِّرُوۡا مَا بِاَنۡفُسِہِمۡ अब ख़्याल होता है कि वह इल्हाम जो हुआ था कि :

"कौन कह सकता है हे बिजली आसमान से मत गिर।"

शायद इसी के बारे में हो।

मैं तुम्हें यह समझाना चाहता हों कि जो लोग बला के आने से पहले दुआ करते हैं और इस्तिग़फार करते और सदक़े देते हैं। अल्लाह तआला उन पर रहम करता है और इलाही अज़ाब से उनको बचा लेता है। मेरी इन बातों को क़िस्सा के तौर पर न सुनो। मैं अल्लाह के लिए नसीहत करता हुआ कहता हूँ अपने हालात पर ग़ौर करो। और आप भी और अपने दोस्तों को भी दुआ में लग जाने के लिए कहो। इस्तिग़फार, अल्लाह के अज़ाब और कठोर मुसीबतों के लिए ढाल का काम देता है। क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है:مَا کَانَ اللّٰہُ مُعَذِّبَہُمۡ وَہُمۡ یَسۡتَغۡفِرُوۡنَ (अलअनफ़ाल: 34) इस लिए अगर तुम चाहते हो कि इस अज़ाब इलाही से तुम सुरक्षित रहो, तो इस्तिग़फ़ार बहुत अधिक पढ़ो।

गर्वनमेंट को अधिकार होगा कि पीड़ित व्यक्तियों को अलग रखा जाए। मानो वे लोग जो अलग किए जाएंगे क़ब्रों में ही होंगे। अमीर तथा ग़रीब,मर्द एवं औरतें , बूढ़े, जवान का कोई अन्तर न किया जाएगा। इसलिए ख़ुदा न चाहे अगर किसी ऐसे स्थान ताऊन फैले जहां तुम में से कोई हो तो मैं तुम्हें हिदायत करता हूँ कि गर्वनमेंट के नियमों की सबसे पहले इताअत करने वाले तुम हो।

प्राय स्थानों में सुना गया है कि पुलिस वालों से मुक़ाबला हुआ। मेरे निकट गर्व-नमेंट के नियमों के ख़िलाफ़ चलना बग़ावत है, जो ख़तरनाक जुर्म है। हाँ गर्वनमेंट का बेशक यह कर्तव्य है कि वह ऐसे अफ़्सर निर्धारित करे जो उत्तम आचरण वाले, सभ्य और देश के रस्मो रिवाज और मज़हबी पाबंदियों से परिचित हों। अत: तुम ख़ुद उन नियमों पर अनुकरण करो और अपने दोस्तों और पड़ोसियों को इन नियमों के लाभ से परिचित कराओ। मैं बार-बार कहता हूँ कि दुआओं का समय यही है मालूम होता है इस महामारी ने पंजाब का रुख कर लिया है, इसलिए ज़रूरी है कि हर एक सचेत और बेदार हो कर दुआ करे और तौबा करे। क़ुरआन शरीफ़ की इच्छा यह है कि जब अज़ाब सिर पर आ पड़े फिर तौबा अज़ाब से नहीं छुड़ा सकती।

इलाही अज़ाब से बचने के तरीक़े

इसलिए इससे पहले कि इलाही अज़ाब आकर तौबा का दरवाज़ा बंद कर दे, तौबा करो। जब कि दुनिया के क़ानून से इतना डर पैदा होता है तो क्या कारण है कि ख़ुदा तआला के क़ानून से न डरें। जब बला सिर पर आ पड़े तो फिर उसका मज़ा चखना ही पड़ता है। चाहिए कि हर एक आदमी तहज्जुद में उठने की कोशिश करे और पाँच वक़्त की नमाज़ों में भी क़नूत मिलाएं । हर एक किस्म की ख़ुदा को नाराज़ करने वाली बातों से तौबा करे। तौबा से यह अभिप्राय है कि इन समस्त बुरे कामों और ख़ुदा की नारज़ागी के कारणों को छोड़कर एक सच्ची तबदीली करें और आगे क़दम रखें और तक़्वा धारण करें। अख़लाक़ को उचित करें इस में भी ख़ुदा का रहम होता है। इन्सानी आदतों को सभ्य करें। ग़ज़ब न हो। विनय और विनम्रता उसका स्थान ले। अख़लाक़ की दुरुस्ती के साथ अपने सामर्थ्य के अनुसार सदक़ों का देना भी धारण करो।یُطۡعِمُوۡنَ الطَّعَامَ عَلٰی حُبِّہٖ مِسۡکِیۡنًا وَّیَتِیۡمًا وَّاَسِیۡرًا (अद्दहर:9) अर्थात ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए असहायों और अनाथों और कैदियों को खाना देते हैं और कहते हैं कि विशेष अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए हम देते हैं और उस दिन से डरते हैं जो बहुत ही भयावह है। सारांक्ष यह कि दुआ से ,तौबा से काम लो और सदक़े देते रहो ताकि अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल और करम के साथ तुमसे मामला करे।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 190 से 192 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

..... पृष्ठ 1 का शेष

उसके आज्ञापालन करने वाले हैं। जिससे मालूम होता है कि इस स्वीकार के बाद इन्सान मुस्लिम बनता है और यह केवल इस्लाम ही की विशेषता है कि वह दुनिया के समस्त नबियों की सत्यता का इक़रार करता है। हर धर्म के अनुयायी अपने अपने धर्म के नबियों की सत्यता तो मनवाते हैं लेकिन दूसरी जातियों के नबियों की सच्चाई मनवाने की तरफ़ कोई ध्यान नहीं करते। इस्लाम सब नबियों की सच्चाई को स्वीकार करता है। चाहे वह बनी इस्राईल में आए हों या हिन्दू ईरान के लोगों में भेजे गए हों या दुनिया के किसी और देश में सुधार के लिए खड़े किए गए हों परन्तु इस से विस्तार वाला ईमान नहीं बल्कि सिर्फ़ संक्षिप्त ईमान अभिप्राय है। अगर विस्तार से ईमान अभिप्राय होता तो وَمَاۤ اُوۡتِیَ النَّبِیُّوۡنَ مِنۡ رَّبِّہِمۡ फ़र्मा कर उन नबियों का वर्णन न किया जाता जिनका नाम भी हमें मालूम नहीं और जिनके हालात का क़ुरआन करीम ने कहीं वर्णन नहीं किया। परन्तु फिर भी संक्षिप्त रूप से उन पर ईमान लाना ज़रूरी क़रार दिया है ।

मैं इस अवसर पर मुसलमानों को भी ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है जो सब नबियों को स्वीकार करे वही मुस्लिम है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम के आने वाले मसीह को नबी उल्लाह क़रार देते हैं और इस ज़माना में मसीह मौऊद का वादा सिल्सिला अहमदिया के संस्थापक के वजूद में पूरा हो चुका है। अत: प्रत्येक व्यक्ति जो इस्लाम से अपने आपको जोड़ता है इस का फ़र्ज़ है कि वह होशियार हो जाए और असावधानी से आपके दावा को न देखे क्योंकि असावधानी से इस्लाम जैसी क़ीमती चीज़ हाथ से जाने का भय है। मुस्लिम वही है जो ख़ुदा तआला के समस्त नबियों को स्वीकार करे और मसीह मौऊद की नबुव्वत भी इससे अलग नहीं। अत: मुसलमानों के लिए होशियार होने की ज़रूरत है।"

(तफ़सीरे कबीर, भाग 2 पृष्ठ 210 से 211 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad